facebook.com/thebharatshri
twitter.com/thebharatshri
website thebharatshri

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम

भारत श्री

राष्ट्रीय हिंदी साप्ताहिक

सोमवार, 18 अगस्त 2025 ● वर्ष 7 ● अंक 04 ● मूल्यः 5 रुपए

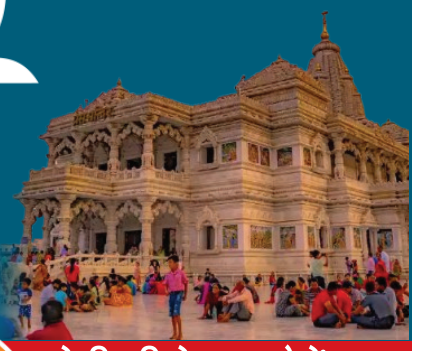

योगी जी के 38 दौरों ...

समागमों में जहां विश्व संत महाब्रह्मऋषि श्री कुमार स्वामी जी संगत को दिव्य बीज मंत्र प्रदान करते हैं, वहीं स्वामी जी अवधान द्वारा भी संगत के कष्टों को हर लेते हैं।

पेज-10-11

सद्गुरु वाणी

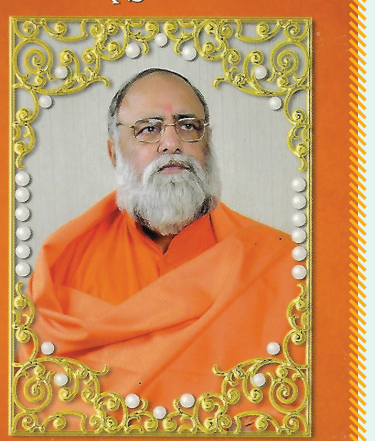

दिव्य पाठ प्रभु कृपा का वह आलोक है जिसे करने के लिए किसी भी प्रकार की कठिन तपस्या या साधना की कोई जरूरत नहीं है। यह बड़ा सहज और सरल है।

●

विश्व भर में होने वाले प्रभु कृपा दुख निवारण समागम केवल प्रभु की कृपा से संभव होते हैं। इसका आयोजन कोई व्यक्ति नहीं करता।

●

परमात्मा की नजर में सभी भाई-बहन बराबर हैं। परमात्मा जाति, धर्म, देश, सम्प्रदाय से पार है। हमें सभी भाई-बहनों को समान दृष्टि से देखना चाहिए।

रूस-यूक्रेन के बीच युद्धबंदियों की बड़ी अदला-बदली

1200 युद्धबंदियों की रिहाई की ओर कदम

@ भारतश्री ब्यूरो

रूस और यूक्रेन के बीच गुरुवार को एक और कैदियों की अदला-बदली हुई। दोनों देशों ने 84-84 युद्धबंदियों को रिहा किया। यह कदम ऐसे समय पर सामने आया है जब एक दिन बाद रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन और अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप अलास्का में मुलाकात करने जा रहे हैं। इसे शांति प्रक्रिया की दिशा में उठाए गए महत्वपूर्ण कदम के तौर पर देखा जा रहा है।

"मैंने कभी नहीं सोचा था कि यह दिन आएगा"

इस आदान-प्रदान में शामिल 29 वर्षीय यूक्रेनी नौसैनिक मायकीता कलिबेर्दा अपने देश लौटते हुए बेहद भावुक हो गए। उन्होंने कहा, "मैं अपने देश लौट आया हूं। सच कहूं तो, मैंने कभी नहीं सोचा था कि यह दिन आएगा।" मायकीता जैसे सैकड़ों सैनिक और नागरिक, जो वर्षों से कैद में थे, आखिरकार अपने घर और परिवार तक पहुंच रहे हैं।

सैन्यकर्मी और नागरिक दोनों शामिल

यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमिर जेलेंस्की ने सोशल मीडिया पर बताया कि इस अदला-बदली में केवल सैन्यकर्मी ही नहीं बल्कि नागरिक भी शामिल हैं। इनमें से कई ऐसे लोग हैं जिन्हें रूस ने 2014, 2016 और 2017 से बंदी बना रखा था।

जेलेंस्की ने कहा कि मारियुपोल शहर की रक्षा करने वाले सैनिक भी इसमें शामिल हैं। मारियुपोल वही रणनीतिक बंदरगाह शहर है, जिस पर 2022 में रूस ने तीन महीने की घेराबंदी के बाद कब्जा कर लिया था।

इंतजार की घड़ियां खत्म हुईं

युद्धबंदियों की रिहाई सिर्फ सैनिकों की वापसी की कहानी नहीं है, बल्कि उनके परिवारों की उम्मीदों का पूरा होना भी है। मारियुपोल में लड़ने वाले एक सैनिक की मां तेतियाना तुर्कमान ने कहा, "मेरा बेटा तीन साल, चार महीने और दो दिन तक कैद में रहा। शुक्र है, हम उसका इंतजार कर रहे थे।" इसी तरह, अनास्तासिया नामक महिला ने बताया कि वह बार-बार आदान-प्रदान कार्यक्रम में इस उम्मीद से जाती थीं कि उनके पति आर्थर इवानिक रिहा होंगे। उन्होंने खुशी जताई कि आखिरकार उनके पति घर लौट रहे हैं।

संयुक्त अरब अमीरात की मध्यस्थता

रूसी रक्षा मंत्रालय ने कहा कि इस अदला-बदली में संयुक्त अरब अमीरात (UAE) ने मध्यस्थ की भूमिका निभाई। यह कोई पहली बार नहीं है जब अबू धाबी ने रूस-यूक्रेन संघर्ष में मानवीय आधार पर हस्तक्षेप किया हो। माना जाता है कि हालिया महीनों में UAE की सक्रियता ने कई आदान-प्रदान समझौतों को संभव बनाया है।रूस ने यह भी बताया कि लौटे हुए सैनिकों को मेडिकल और मनोवैज्ञानिक सहयोग प्रदान किया जा रहा है।

इस्तांबुल में वार्ताओं का असर

पिछले कुछ महीनों में इस्तांबुल में रूस और यूक्रेन के बीच तीन दौर की शांति वार्ता हुई है। इन वार्ताओं का सबसे ठोस नतीजा यही कैदियों की बड़े पैमाने पर अदला-बदली है। यह दिखाता है कि गहन तनाव और युद्ध की पृष्ठभूमि में भी मानवीय मुद्दों पर दोनों पक्ष समझौते तक पहुंच सकते हैं।

1200-1200 कैदियों की रिहाई पर सहमति

पिछले महीने दोनों देशों ने 1,200-1,200 युद्धबंदियों को रिहा करने पर सहमति जताई थी। यह अब तक का सबसे बड़ा प्रस्तावित एक्सचेंज होगा। इसके अलावा रूस ने यूक्रेन को 3,000 मारे गए सैनिकों के शव लौटाने की पेशकश भी की है। यह पहल दोनों देशों के बीच मानवीय आधार पर भरोसा बहाल करने की दिशा में अहम कदम मानी जा रही है।

युद्ध और मानवीय पीड़ा

रूस-यूक्रेन युद्ध फरवरी 2022 से लगातार जारी है। इस संघर्ष में लाखों लोग विस्थापित हुए हैं और हजारों सैनिक व नागरिक मारे गए हैं। युद्धबंदियों का मुद्दा बार-बार चर्चा में आता रहा है। परिवारों के लिए यह केवल राजनीतिक सवाल नहीं बल्कि जिंदगी और मौत का मसला है।

पुतिन-ट्रंप मुलाकात

इस अदला-बदली का समय भी खास है। शुक्रवार को पुतिन और ट्रंप अलास्का में मिलने वाले हैं। यह मुलाकात वैश्विक राजनीति की दिशा तय कर सकती है। विश्लेषकों का मानना है कि कैदियों की रिहाई को अमेरिका और पश्चिमी देशों के लिए सकारात्मक संदेश के तौर पर भेजा गया है, ताकि बातचीत के लिए बेहतर माहौल बन सके।

MN DIVINE

ORDER ALL TYPES OF :

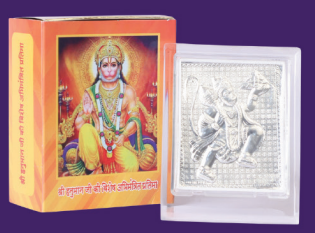

- POOJA SAMAGRI,
- AYURVEDIC MEDICINE
- AND PRATIMA.

NOW GET AT YOUR HOME ON

MNDIVINE.COM

ORDER NOW

https://mndivine.com/

HELPLINE : 9667793986
(10AM TO 6PM, MON-SAT)

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम
भारत श्री

जन्माष्टमी का जोरदार जश्न: देश भर में कान्हा की धूम

देश के कोने-कोने में जन्माष्टमी की रौनक

जन्माष्टमी का त्योहार हर साल भगवान कृष्ण के जन्म की खुशी में मनाया जाता है। इस साल यह पर्व 16 अगस्त को पड़ा। पूरे देश में लोग बड़े उत्साह से इसे मनाते हैं। मथुरा और वृंदावन जैसे जगहों में तो यह त्योहार सबसे ज्यादा धूमधाम से होता है क्योंकि यही कृष्ण जी का जन्म स्थान है। वहां लाखों लोग मंदिरों में जाते हैं, भजन गाते हैं और रात को आरती करते हैं। मंदिरों को फूलों और रोशनी से सजाया जाता है। लोग बाल गोपाल की झांकियां बनाते हैं और उन्हें माखन-मिश्री चढ़ाते हैं। दिल्ली में आईस्कॉन मंदिर और लक्ष्मी नारायण मंदिर में भीड़ उमड़ती है। लोग वहां पूजा करते हैं और कृष्ण जी की लीलाओं का नाटक देखते हैं। मुंबई में दही-हांडी का खेल होता है जहां जवान लोग मटकी फोड़ते हैं। यह कृष्ण जी की बचपन की शरारतों की याद दिलाता है। गुजरात और राजस्थान में भी मंदिरों में भजन-कीर्तन चलते हैं।

ओडिशा और पश्चिम बंगाल में लोग व्रत रखते हैं और घरों में विशेष मिठाइयां बनाते हैं। दक्षिण भारत में लोग घरों में छोटे-छोटे पैरों के निशान बनाते हैं जैसे कृष्ण जी आ रहे हों। बिहार में पटना के आईस्कॉन मंदिर में लोग पूजा करते हैं और भगवान के दर्शन करते हैं। उत्तर प्रदेश में गोरखपुर के गोरखनाथ मंदिर में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी ने बच्चों के साथ जन्माष्टमी मनाई। वहां रंगारंग कार्यक्रम हुए। मध्य प्रदेश में उज्जैन और अन्य जगहों पर मंदिर सजे हुए थे। पंजाब और हरियाणा में भी लोग घरों में पूजा करते हैं। जम्मू-कश्मीर में कश्मीर के लोग भी इसे मनाते हैं लेकिन ज्यादा सादगी से। मणिपुर में रास पूर्णिमा के साथ जन्माष्टमी मनाते हैं। पूरे देश में यह त्योहार एकता और भक्ति का प्रतीक है। लोग व्रत रखते हैं, भजन गाते हैं और एक-दूसरे को शुभकामनाएं देते हैं। इस साल मथुरा में 25 लाख लोगों ने दर्शन किए। वहां सोने से बने झूले पर कृष्ण जी को झुलाया गया। वृंदावन में रासलीला का आयोजन हुआ। लोग रात भर जागते हैं और कृष्ण जी का जन्म मनाते हैं।

दिल्ली के नोएडा में सेक्टर 105 में जन्माष्टमी मनाई गई जहां लोग भजन गाते हुए नाचे। राजस्थान के बांसवाड़ा में कुशलबाग मैदान में मटकी फोड़ प्रतियोगिता हुई और पहलवानों ने करतब दिखाए। मंदिरों में 56 भोग लगाए गए और महा आरती हुई। जयकारों से शहर गूंज उठा। झुंझुनू की नरहर दरगाह में भी जन्मोत्सव मनाया गया जो हिंदू-मुस्लिम एकता का प्रतीक है। मुरादाबाद में नगर पंचायत भोजपुर धर्मपुर में शोभायात्रा निकाली गई जहां झांकियां और नृत्य हुए। पुलिस ने सुरक्षा के अच्छे इंतजाम किए। सतना में वेंकटेश मंदिर और जगतदेव तालाब में श्रद्धालु उमड़े।

आईस्कॉन मंदिर में भी कार्यक्रम हुए। बाराबंकी में मोहम्मदपुर खाला थाने में जन्माष्टमी मनाई गई जहां कलाकारों ने भजन गाए और मिठाइयां बांटी गईं। पुलिस लाइन में भी उत्सव हुआ। कोटा में श्री कृष्ण नवयुवक मंडल बोरखेड़ा में कार्यक्रम हुए। लोग सम्मिलित हुए और सम्मान हुआ। यह सब दिखाता है कि जन्माष्टमी पूरे देश को एक सूत्र में बांधती है। हर जगह अलग-अलग तरीके से मनाई जाती है लेकिन भक्ति सबमें एक जैसी है।

पूरे देश का माहौल: भक्ति और खुशी से भरा

जन्माष्टमी पर देश का माहौल बहुत अच्छा रहा। हर तरफ भक्ति और खुशी छाई हुई थी। लोग सुबह से ही मंदिरों की ओर जाते दिखे। मंदिरों में भजन-कीर्तन की धुनें गूंज रही थीं। रात को जब कृष्ण जी का जन्म मनाया गया तो जयकारों से आसमान गूंज उठा। लोग व्रत रखे हुए थे लेकिन उनके चेहरे पर थकान नहीं बल्कि खुशी थी। परिवार के लोग साथ में पूजा करते थे। बच्चे विशेष रूप से उत्साहित थे। वे बाल गोपाल की तरह कपड़े पहनते थे और झूला झुलाते थे। शहरों में शोभायात्राएं निकलीं जहां झांकियां सजी हुई थीं। लोग नाचते-गाते चलते थे। गांवों में भी त्योहार की रौनक थी। लोग घरों में पूजा करते थे और पड़ोसियों को मिठाई बांटते थे। पुलिस ने सुरक्षा के अच्छे इंतजाम किए जिससे लोग बिना डर के त्योहार मना सके। कुछ जगहों पर सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए जहां कलाकारों ने कृष्ण जी की लीलाओं का नाटक किया। टीवी और सोशल मीडिया पर भी जन्माष्टमी की खबरें छाई रहीं। लोग एक-दूसरे को शुभकामनाएं देते रहे। माहौल ऐसा था जैसे पूरा देश कृष्ण जी के रंग में रंगा हुआ हो। कोई झगड़ा नहीं, सिर्फ प्यार और भक्ति।

यह त्योहार हमें सिखाता है कि जीवन में अच्छाई की जीत होती है। देश का माहौल शांतिपूर्ण और खुशहाल रहा। लखनऊ में एक हादसा हुआ जहां तेज गाड़ी ने लोगों को कुचला लेकिन कुल मिलाकर त्योहार अच्छे से बीता। मथुरा में ऑपरेशन सिंदूर की थीम पर उत्सव हुआ जो सेना की बहादुरी की याद दिलाता था। वहां बोर्ड लगाए गए थे जिसमें सेना के प्रतीक दिखाए गए। यह माहौल को और विशेष बनाता था। दिल्ली में मंदिरों में लंबी लाइनें लगीं लेकिन लोग धैर्य से इंतजार करते रहे। मुंबई में दही-हांडी में युवा जोश दिखा। लोग टीम बनाकर मटकी फोड़ते थे। यह देखकर माहौल और जोशीला हो जाता था। राजस्थान में दरगाह में भी जन्माष्टमी मनाई गई जो एकता का संदेश देता था। पूरे देश में ऐसा लगा जैसे कृष्ण जी हर जगह मौजूद हों। भक्तों की आंखों में आंसू और मुस्कान दोनों थे। यह माहौल हमें सोचने पर मजबूर करता है कि त्योहार कैसे लोगों को जोड़ते हैं।

जन्माष्टमी को ऐतिहासिक क्यों कहा गया

जन्माष्टमी को कई जगहों पर ऐतिहासिक कहा गया। मथुरा में यह त्योहार हमेशा ऐतिहासिक होता है क्योंकि यही कृष्ण जी का जन्म स्थान है। इस साल इसे 5252वें जन्मदिन के रूप में मनाया गया। मंदिरों में विशेष थीम पर सजावट की गई। जैसे ऑपरेशन सिंदूर की थीम जो सेना की बहादुरी को याद दिलाती थी। यह ऐतिहासिक घटना की याद में था। कृष्ण जी का जन्म कंस के जेल में हुआ था जो अधर्म पर धर्म की जीत का प्रतीक है। इतिहास में कृष्ण जी ने महाभारत में अर्जुन को गीता का उपदेश दिया जो आज भी प्रासंगिक है। वृंदावन में रासलीला ऐतिहासिक लीलाओं को दिखाती है। द्वारका में कृष्ण जी के मंदिर में उत्सव ऐतिहासिक महत्व रखता है क्योंकि वहां कृष्ण जी राजा थे। उडुपी और नाथद्वारा में भी विशेष पूजा होती है जो पुरानी परंपराओं को जीवित रखती है। जयपुर में राधा दामोदर मंदिर में 500 साल पुरानी परंपरा निभाई गई जहां कृष्ण जी को 2.5 साल के बच्चे के रूप में पूजा गया। यह ऐतिहासिक है। केरल में तारीख को लेकर बहस हुई लेकिन वहां भी त्योहार मनाया गया। इतिहास बताता है कि जन्माष्टमी हजारों साल पुरानी है। कृष्ण जी विष्णु के अवतार थे। उनका जन्म बुराई खत्म करने के लिए हुआ। मथुरा में इस साल उत्सव को ऐतिहासिक कहा गया क्योंकि लाखों लोग आए और विशेष आयोजन हुए। यह हमें सोचने पर मजबूर करता है कि इतिहास कैसे वर्तमान को प्रभावित करता है। कृष्ण जी की शिक्षाएं आज भी हमें सही रास्ता दिखाती हैं।

पिछले सालों में विशेष उत्सव: कहां-कहां हुआ खास

पिछले कुछ सालों में जन्माष्टमी को विशेष त्योहार की तरह मनाया जा रहा है। मथुरा और वृंदावन में हर साल लाखों लोग आते हैं। वहां रासलीला और झांकियां विशेष होती हैं। महाराष्ट्र में दही-हांडी पिछले सालों से बड़े स्तर पर होता है। टीमें बनाकर प्रतियोगिता होती है। गुजरात में नंद उत्सव मनाते हैं जहां लोग नाचते हैं। राजस्थान में नाथद्वारा मंदिर में विशेष पूजा होती है। ओडिशा में पुरी में कृष्ण जी को विशेष भोग लगाते हैं। पश्चिम बंगाल में उपवास और मिठाइयां बनाते हैं। दक्षिण भारत में उडुपी मंदिर में पिछले सालों से उत्सव बढ़ा है। आईस्कॉन मंदिरों में पूरी दुनिया में विशेष कार्यक्रम होते हैं। पिछले साल 2024 में मुंबई में जन्माष्टमी पर गोविंदा ने डांस किया जो विशेष था। वृंदावन में फूलों की होली खेली जाती है। मणिपुर में रास पूर्णिमा के साथ मनाते हैं। जम्मू में पिछले सालों से उत्सव बढ़ा है।

दिल्ली में बिड़ला मंदिर में विशेष आरती होती है। मध्य प्रदेश में सागर के बामोरा में रुद्राक्ष धाम में भजन संध्या होती है जहां सुप्रसिद्ध गायक आते हैं। यह पिछले सालों से जारी है। उज्जैन में महाकाल के साथ जन्माष्टमी मनाते हैं। यह विशेष है क्योंकि शिव और विष्णु दोनों की पूजा होती है। पिछले सालों में सोशल मीडिया पर जन्माष्टमी की तस्वीरें वायरल होती हैं जो उत्सव को और विशेष बनाती हैं। लोग घरों में भी विशेष सजावट करते हैं। यह दिखाता है कि त्योहार कैसे बदल रहा है लेकिन भक्ति वही है। हमें सोचना चाहिए कि विशेष उत्सव कैसे संस्कृति को जीवित रखते हैं।

जन्माष्टमी का संदेश: आज के लिए प्रेरणा

जन्माष्टमी सिर्फ त्योहार नहीं बल्कि जीवन का सबक है। कृष्ण जी ने सिखाया कि बुराई पर अच्छाई जीतती है। आज के समय में जब दुनिया में झगड़े हैं, यह त्योहार हमें एकता सिखाता है। देश के अलग-अलग जगहों पर मनाने से पता चलता है कि विविधता में एकता है। माहौल भक्ति से भरा था जो हमें शांत रखता है। ऐतिहासिक महत्व हमें पुरानी बातों से सीखने को कहता है। पिछले सालों के विशेष उत्सव दिखाते हैं कि परंपरा जारी है। हमें सोचना चाहिए कि कैसे यह त्योहार हमें बेहतर इंसान बनाता है। कृष्ण जी की गीता आज भी रास्ता दिखाती है। निष्काम कर्म करो, फल की चिंता मत करो। यह विचार हमें आगे बढ़ने की ताकत देता है। जन्माष्टमी हमें याद दिलाती है कि जीवन में खुशी और भक्ति जरूरी है। पूरे देश में यह त्योहार हमें जोड़ता है और सकारात्मक ऊर्जा देता है। आने वाले सालों में इसे और अच्छे से मनाएं। जय श्री कृष्ण।

राधा-कृष्ण की लीलाओं से झूम उठा बुराड़ी

कैप्टन ए.पी. सिंह के प्रयास से गरीब बच्चों ने मनाई अनोखी जन्माष्टमी

@ अंकित कुमार

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का पर्व देशभर में हर्ष और उल्लास के साथ मनाया गया। राजधानी दिल्ली से लेकर देश के कोने-कोने तक बड़े-बड़े मंदिरों में विशाल झांकियाँ, भव्य सजावट और धार्मिक आयोजनों का दौर चलता रहा। श्रीकृष्ण की लीलाओं का मंचन हुआ, बाल गोपाल की प्रतिमाओं का श्रृंगार किया गया और भक्तगण रातभर भक्ति-संगीत में सराबोर रहे। जहाँ एक ओर विशाल मंदिरों में लाखों श्रद्धालु एकत्र हुए, वहीं दिल्ली के बाहरी क्षेत्र बुराड़ी की एक साधारण-सी कॉलोनी में भी जन्माष्टमी की ऐसी झलक देखने को मिली जिसने सभी का मन मोह लिया।

नत्थू कॉलोनी में अलग हटकर उत्सव

16 अगस्त को नाथू कॉलोनी, बुराड़ी स्थित तिरंगा चौक पर एक छोटे से मंच पर जन्माष्टमी का आयोजन किया गया। यह आयोजन किसी बड़े मंदिर समिति या भारी-भरकम संस्थान ने नहीं, बल्कि एक छोटे से एनजीओ ने किया। यह एनजीओ गरीब और जरूरतमंद लड़कियों को सिलाई, कढ़ाई, बुनाई, मेहंदी, मेकअप, नृत्य और कंप्यूटर शिक्षा जैसी उपयोगी विधाओं का निःशुल्क प्रशिक्षण देता है। सबसे बड़ी बात यह है कि इस संस्था के पास कोई बड़ा आर्थिक सहयोग नहीं है। इसे पूरी तरह चलाते हैं कैप्टन ए.पी. सिंह, जो कि सेना से सेवानिवृत्त अधिकारी हैं। वे अपनी पेंशन की राशि से ही इस एनजीओ को आगे बढ़ा रहे हैं और इसी से ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन भी कर पाते हैं।

बच्चों ने गढ़ी भक्ति की अनोखी छवि

कार्यक्रम में एनजीओ से जुड़े बच्चों ने नृत्य-नाटिकाओं के माध्यम से भगवान श्रीकृष्ण और राधारानी की लीलाओं को प्रस्तुत किया। जब मंच पर छोटे-छोटे कलाकारों ने माखन चोरी, रासलीला और गोकुल की झांकियाँ दिखाईं, तो पूरा वातावरण भक्तिमय हो गया। दर्शकों को ऐसा प्रतीत हुआ मानो वृंदावन की पावन भूमि उनके सामने सजीव हो उठी हो।

साथ ही, रामराज प्रोडक्शन के गायक-कलाकारों ने मधुर भजनों की प्रस्तुति दी। मुरली की धुन पर गाए गए इन भजनों ने वातावरण को और भी आध्यात्मिक बना दिया। "राधे-राधे" और "श्याम तेरी बंसी पुकारे" जैसे भजनों पर भक्तजन झूम उठे।

श्रद्धालुओं की उमड़ी भीड़

यह आयोजन भले ही कॉलोनी स्तर पर हुआ, लेकिन इसकी गूंज पूरे क्षेत्र में सुनाई दी। आसपास की बस्तियों और कॉलोनियों से बड़ी संख्या में श्रद्धालु वहाँ पहुँचे। मंच के सामने भक्तों की भीड़ उमड़ पड़ी थी। लोग झूम-झूमकर तालियाँ बजा रहे थे और बच्चों की प्रस्तुतियों की सराहना कर रहे थे। ऐसा दृश्य था कि मानो प्रत्येक व्यक्ति भगवान श्रीराधा-कृष्ण की भक्ति में तल्लीन हो गया हो।कार्यक्रम के अंत में मंच पर ही भव्य आरती का आयोजन किया गया। दीपों की लौ और घंटियों की गूंज से वातावरण मंत्रमुग्ध हो उठा। आरती के पश्चात सभी श्रद्धालुओं को प्रसाद वितरित किया गया।

एनजीओ और उसके सांचे का महत्व

आज जब समाज में अधिकांश धार्मिक आयोजन केवल भव्यता और आडंबर तक सीमित होकर रह गए हैं, ऐसे में नाथू कॉलोनी का यह आयोजन समाज को नई दिशा देता है। इस छोटे से एनजीओ का उद्देश्य केवल धार्मिक आयोजन करना नहीं, बल्कि गरीब और वंचित बच्चों को शिक्षा और कौशल प्रदान कर उन्हें आत्मनिर्भर बनाना है।कैप्टन ए.पी. सिंह का कहना है कि "यह संस्था मेरी पेंशन से चल रही है। मैं चाहता हूँ कि जिन बच्चों को अवसर नहीं मिल पाता, उन्हें कला और शिक्षा का मंच दिया जाए। यह नन्हें कलाकार जब मंच पर खड़े होकर अपनी प्रतिभा दिखाते हैं तो मुझे लगता है कि मेरी सेवा का असली फल मुझे अब मिल रहा है।"

समाज को देना होगा सहयोग

इस प्रकार के एनजीओ केवल धार्मिक-सांस्कृतिक परंपराओं को जीवित रखने का कार्य नहीं करते, बल्कि समाज में नई ऊर्जा भी भरते हैं। उनकी बदौलत गरीब घरों के बच्चे भी मंच पर अपनी कला और संस्कारों का प्रदर्शन कर पाते हैं। यदि समाज के संपन्न लोग और संस्थाएँ ऐसे प्रयासों को सहयोग दें, तो निश्चित ही हजारों बच्चों का भविष्य उज्ज्वल हो सकता है।

जन्माष्टमी केवल मंदिरों और बड़े-बड़े आयोजनों में मनाने का पर्व नहीं है। इसका वास्तविक अर्थ तभी साकार होता है जब समाज के प्रत्येक वर्ग को इसमें भागीदारी का अवसर मिले। नाथू कॉलोनी का यह आयोजन इस बात का जीवंत उदाहरण है कि सीमित संसाधनों के बावजूद यदि भावना सच्ची हो तो भक्ति और संस्कृति का दिव्य संगम रचा जा सकता है।

इस आयोजन ने यह सिद्ध कर दिया कि श्रीकृष्ण की लीला केवल मंचों पर अभिनय नहीं, बल्कि जीवन जीने की प्रेरणा है। छोटे बच्चों ने अपनी प्रस्तुतियों और भजनों से यही संदेश दिया कि भक्ति में आडंबर नहीं, बल्कि हृदय की सच्चाई ही सर्वोपरि है। ऐसे प्रयासों को समाज का हर व्यक्ति प्रोत्साहन दे, यही इस जन्माष्टमी पर सबसे बड़ा संकल्प होना चाहिए।

विभाजन के छिपे राज़: NCERT की किताब ने खोला पिटारा!

NCERT की नई मॉड्यूल: कंट्रोवर्सी की आग!

आजकल इंडिया में हिस्ट्री की किताबों पर बहस छिड़ी हुई है। NCERT ने हाल ही में एक स्पेशल मॉड्यूल रिलीज़ किया है, जो "पार्टीशन हॉर्रर्स रेमेमब्रेन्स डे" के लिए है। ये मॉड्यूल क्लास 6 से 12 तक के स्टूडेंट्स के लिए है। इसमें 1947 के इंडिया-पाकिस्तान विभाजन के लिए तीन लोगों को ब्लेम किया गया है: मोहम्मद अली जिन्ना, कांग्रेस और लॉर्ड माउंटबेटन। ये मॉड्यूल कहता है कि विभाजन गलत आइडियाज़ की वजह से हुआ। मुस्लिम लीग की 1940 की लाहौर कॉन्फ्रेंस में जिन्ना ने पाकिस्तान की डिमांड की। कांग्रेस ने इसे एक्सेप्ट कर लिया और माउंटबेटन ने जल्दबाज़ी में इसे इम्प्लीमेंट किया। ये न्यूज़ पिछले एक-दो दिन में हर जगह छाई हुई है। ट्रिब्यून इंडिया, टाइम्स ऑफ इंडिया और हिंदू जैसे बड़े न्यूज़पेपर्स ने इस पर रिपोर्ट की है।

कांग्रेस पार्टी इस मॉड्यूल से बहुत नाराज़ है। उन्होंने कहा कि ये हिस्ट्री को डिस्टॉर्ट कर रहा है। कांग्रेस स्पोक्सपर्सन पवन खेड़ा ने कहा कि अगर किताब में फैक्ट्स मिसिंग हैं, तो इसे आग लगा दो। उन्होंने पॉइंट आउट किया कि हिंदू महासभा ने सबसे पहले विभाजन का आइडिया सजेस्ट किया था, 1938 में। मुस्लिम लीग और हिंदू महासभा दोनों ने टू-नेशन थ्योरी को सपोर्ट किया। लेकिन NCERT की किताब में ये मेंशन नहीं है। BJP ने इसका डिफेंड किया और कहा कि ये ट्रूथ है। उन्होंने कांग्रेस को "राहुल-जिन्ना" पार्टी कहा, मतलब दोनों एक जैसे हैं। ये कंट्रोवर्सी दिखाती है कि हिस्ट्री कैसे पॉलिटिक्स से जुड़ी हुई है। स्टूडेंट्स को क्या पढ़ाया जाए, ये बड़ा इश्यू बन गया है। मॉड्यूल कहता है कि कांग्रेस लीडर्स ने जिन्ना की इन्फ्लुएंस को अंडरएस्टिमेट किया और विभाजन के हॉर्रर्स को फॉरसी नहीं किया। ये मॉड्यूल पार्टीशन हॉर्रर्स रेमेमब्रेन्स डे पर रिलीज़ हुआ, जो हर साल 14 अगस्त को मनाया जाता है। इसमें स्टोरीज़, पिक्चर्स और एक्टिविटीज़ हैं जो विभाजन के दर्द को बताती हैं। लेकिन क्रिटिक्स कहते हैं कि ये एक साइडेड व्यू है। हिस्ट्री में सबको ब्लेम करने की बजाय, ब्रिटिश की डिवाइड एंड रूल पॉलिसी को इग्नोर किया गया है। ये मॉड्यूल ऑनलाइन अवेलेबल है और स्कूल्स में यूज़ होगा। लेटेस्ट न्यूज़ से पता चलता है कि ये डिबेट अभी थमने वाला नहीं है। इंडियन एक्सप्रेस और टाइम्स नाउ जैसे सोर्सेज़ ने डिटेल में एक्सप्लेन किया कि क्यों ये पॉलिटिकल स्लगफेस्ट बन गया है। कुल मिलाकर, NCERT की ये किताब हिस्ट्री को नए एंगल से देख रही है, लेकिन बैलेंस्ड है या नहीं, ये डिबेट का सब्जेक्ट है।

जिन्ना, कांग्रेस, माउंटबेटन: विभाजन के तीन विलेन?

अब आइए डिटेल में देखें कि NCERT की किताब किसे ब्लेम कर रही है। सबसे पहले मोहम्मद अली जिन्ना। जिन्ना मुस्लिम लीग के लीडर थे। 1940 में लाहौर रेज़ोल्यूशन में उन्होंने अलग मुस्लिम नेशन की डिमांड की। किताब कहती है कि जिन्ना ने विभाजन की मांग की, जो गलत आइडियाज़ पर बेस्ड थी। दूसरे, कांग्रेस। कांग्रेस ने इंडिपेंडेंस की फाइट लड़ी, लेकिन किताब कहती है कि

उन्होंने विभाजन को एक्सेप्ट कर लिया। कांग्रेस लीडर्स जैसे नेहरू और गांधी ने सोचा कि इससे प्रॉब्लम सॉल्व हो जाएगी, लेकिन उन्होंने जिन्ना की स्ट्रेंथ को कम आंका। तीसरे, लॉर्ड माउंटबेटन, जो उस टाइम वाइसरॉय थे। उन्होंने इंडिपेंडेंस की डेट को 1948 से 1947 में शिफ्ट कर दिया, जिससे जल्दबाज़ी हुई और वायलेंस बढ़ा।

ये ब्लेम गेम नया नहीं है, लेकिन NCERT ने इसे ऑफिशियल बना दिया। रेडिट और ऑर्गनाइज़र जैसे प्लेटफॉर्म्स पर लोग डिस्कस कर रहे हैं कि ये किताब सेनिटाइज़्ड नैरेटिव को चैलेंज कर रही है। कांग्रेस का कहना है कि असली विलेन हिंदू महासभा और मुस्लिम लीग थे, जो कम्यूनल पॉलिटिक्स खेल रहे थे। 1938 में हिंदू महासभा ने टू-नेशन थ्योरी को सपोर्ट किया। BJP कहती है कि कांग्रेस ने विभाजन को अवॉइड नहीं किया, बल्कि एक्सेप्ट किया। हिंदुस्तान टाइम्स ने रिपोर्ट किया कि BJP इसे "ट्रूथ इन सिलेबस" कह रही है। विभाजन में लाखों लोग मारे गए, करोड़ों डिस्प्लेस्ड हुए। किताब में ये हॉर्रर्स बताए गए हैं, लेकिन ब्लेम सिर्फ तीन पर। क्रिटिक्स कहते हैं कि ब्रिटिश की रोल को कम दिखाया गया।

ब्रिटिश ने डिवाइड एंड रूल पॉलिसी से हिंदू-मुस्लिम को अलग किया। लेकिन मॉड्यूल में फोकस इंडियन लीडर्स पर है। Zee न्यूज़ ने वीडियो में एक्सप्लेन किया कि क्यों ये कंट्रोवर्सी स्पार्क हुई। ट्रिब्यून इंडिया ने कहा कि कांग्रेस और BJP के बीच वॉर ऑफ वर्ड्स चल रहा है। रेडिफ ने डिटेल में लिखा कि तीन एलिमेंट्स रिस्पॉन्सिबल थे: जिन्ना ने डिमांड की, कांग्रेस ने एक्सेप्ट की, माउंटबेटन ने हेस्टन की। ये सेक्शन दिखाता है कि विभाजन कॉम्प्लिकेटेड था, लेकिन NCERT ने सिंपल ब्लेम गेम खेला। क्या ये फेयर है? सोचने वाली बात है।

कांग्रेस की नेशनल थिंकिंग vs मुस्लिम लीग की माइनॉरिटी प्रोटेक्शन: बड़ा डिफरेंस!

कांग्रेस और मुस्लिम लीग की थिंकिंग में बड़ा डिफरेंस था, जो विभाजन का रीज़न बना। कांग्रेस की सोच राष्ट्रव्यापी थी, मतलब पूरे इंडिया को एक रखना, सेक्युलर और यूनाइटेड। वे चाहते थे कि हिंदू, मुस्लिम सब साथ रहें, एक नेशन में। मुस्लिम लीग की सोच अल्पसंख्यक सुरक्षा की थी। वे कहते थे कि मुस्लिम्स माइनॉरिटी हैं, हिंदू मेजॉरिटी उन्हें दबाएगी। इसलिए अलग स्टेट चाहिए, जहां मुस्लिम्स सेफ रहें। ये टू-नेशन थ्योरी थी, कि हिंदू और मुस्लिम दो अलग नेशन हैं।

बर्टलबी जैसे सोर्सेज़ ने एक्सप्लेन किया कि कांग्रेस और लीग कभी कोऑपरेट करते, कभी ओपोज़। कांग्रेस एजिटेशनल पॉलिटिक्स करती, लीग गवर्नमेंट से रिस्पेक्टफुली डिमांड करती। क्वोरा पर डिस्कशन है कि कांग्रेस वन नेशन चाहती, लीग पार्टिशन। NIHCR के पेपर में डिटेल है कि कांग्रेस ब्रॉड इंडियन इंटरेस्ट्स रिप्रेजेंट करती, लीग मुस्लिम स्पेसिफिक। मिली गजेट ने कहा कि कांग्रेस मेनिफेस्टो कभी लीग थिंकिंग रिफ्लेक्ट करता, लेकिन फंडामेंटली डिफरेंट। लॉ मंत्रा जर्नल ने लिखा कि कांग्रेस यूनिटी के लिए स्टैंड करती, लीग पार्टिशन के लिए।

ये डिफरेंस 1940s में क्लियर हुआ। लीग ने पाकिस्तान डिमांड की ताकि मुस्लिम्स प्रोटेक्टेड रहें। कांग्रेस ने सोचा कि यूनाइटेड इंडिया में सबके राइट्स सेफ हैं। लेकिन लीग को डर था कि इंडिपेंडेंट इंडिया में मुस्लिम्स सेकंड क्लास सिटीजन बन जाएंगे। न्यू इंडियन एक्सप्रेस ने साउथ एशिया माइनॉरिटी पॉलिटिक्स पर लिखा कि लीग की थिंकिंग अब भी इफेक्ट करती है। रेडिट पर डिबेट है कि जिन्ना ने इंडिया में रहने वाले मुस्लिम्स के लिए क्या प्लान था? वे सिर्फ मेजॉरिटी एरियाज़ को सेव करना चाहते थे। ये डिफरेंस दिखाता है कि थिंकिंग का क्लैश विभाजन का बड़ा रीज़न था। कांग्रेस की नेशनल व्यू vs लीग की प्रोटेक्शन व्यू ने इंडिया को दो भागों में बांट दिया। आज भी ये डिबेट रेलेवेंट है, क्योंकि माइनॉरिटी राइट्स का इश्यू कंटिन्यू है।

हिस्टोरियंस की नज़र: बिपन चंद्रा और इरफान हबीब की व्याख्या!

हिस्टोरियंस विभाजन पर क्या कहते हैं: बिपन चंद्रा और इरफान हबीब। बिपन चंद्रा नैशनलिस्ट हिस्टोरियन थे। उन्होंने विभाजन का ब्लेम इम्पीरियलिस्ट्स पर लगाया, मतलब ब्रिटिश पर। ब्रिटिश ने डिवाइड एंड रूल से कम्यूनल फोर्सेज़ को बढ़ावा दिया। CPIM के आर्टिकल में लिखा है कि बिपन चंद्रा ने स्ट्रगल-टूस-स्ट्रगल स्ट्रेटेजी एक्सप्लेन की। उन्होंने कहा कि नैशनलिस्ट्स ने ब्रिटिश को अंडरमाइन किया, लेकिन कम्यूनल फोर्सेज़ ने पार्टिशन कराया। बिपन चंद्रा ने मॉडर्न इंडियन हिस्ट्री पर बुक्स लिखीं, जहां उन्होंने मार्क्सिज़्म को डिफेंड किया और कोलोनियल इंटरप्रिटेशंस को ओपोज़ किया। फ्रंटलाइन में उनका ओबिचुअरी है, जहां कहा गया कि वे क्वालिटी एकेडमिक वर्क को पब्लिक तक पहुंचाते थे।

इरफान हबीब मार्क्सिस्ट हिस्टोरियन हैं। वे इकोनॉमिक और क्लास ऐस्पेक्ट्स पर फोकस करते हैं। विभाजन में उन्होंने क्लास डिविज़न्स और एग्रीरियन कॉज़ेज़ को हाईलाइट किया। इंडियन एक्सप्रेस इंटरव्यू में उन्होंने कहा कि लेफ्ट मूवमेंट को कंडेम नहीं करना चाहिए। वे कहते हैं कि नैशनल हिस्ट्री में कॉमन ग्राउंड बोलना चाहिए, कास्ट और क्लास डिविज़न्स को। IOS सिम्पोज़ियम में उन्होंने मिथ्स को डिमॉलिश किया, रोमिला थापर और बिपन चंद्रा के साथ। सेज जर्नल में लिखा है कि पार्टिशन ने हिस्टोरियंस को लॉस का सेंस दिया। कुछ क्रिटिक्स कहते हैं कि ये लेफ्ट हिस्टोरियंस हिस्ट्री को डिस्टॉर्ट करते, हिंदूइज़्म को बैड दिखाते। लेकिन न्यूज़क्लिक कहता है कि राइट विंग उन्हें हेट करता क्योंकि वे ट्रूथ बोलते। ओपन मैगज़ीन में बिपन चंद्रा की स्पीच में कंट्रोवर्सी को वेलकम कहा। धर्मा डिस्पैच ने UGC को क्रेडिट दिया कि सेक्युलर हिस्ट्री को चेंज कर रहे, लेकिन थापर, हबीब की बुक्स अभी भी हैं। क्वोरा पर डिबेट है कि क्यों वे जेल में नहीं, लेकिन BJP रूल में भी फ्री हैं। फेसबुक पोस्ट में कहा कि उन्होंने हिस्ट्री को फाल्सिफाई किया। ये व्याख्या दिखाती है कि हिस्टोरियंस विभाजन को मल्टीपल एंगल से देखते, सिर्फ ब्लेम गेम नहीं।

क्या सीखें हम: बैलेंस्ड व्यू की जरूरत!

विभाजन की स्टोरी हमें सिखाती है कि थिंकिंग का क्लैश कितना डेंजरस होता है। NCERT की किताब ने डिबेट स्टार्ट किया, लेकिन बैलेंस्ड व्यू चाहिए। हिस्टोरियंस जैसे बिपन चंद्रा और इरफान हबीब कहते हैं कि ब्रिटिश और कम्यूनल फोर्सेज़ रिस्पॉन्सिबल थे। आज के टाइम में, माइनॉरिटी प्रोटेक्शन इंपॉर्टेंट है, लेकिन नेशनल यूनिटी से ऊपर नहीं। CFR ने इंडिया के मुस्लिम्स पर बैकग्राउंडर दिया कि डिस्क्रिमिनेशन वर्सन हो रहा। ये आर्टिकल सभी एंगल्स कवर करता, ताकि रीडर्स सोचें।

राष्ट्रीय हिंदी साप्ताहिक

भारत श्री

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम

सोमवार, 18 अगस्त 2025, विक्रम संवत 2080

धर्म और राजनीति को महिला-पुरुष संबंधों से बाहर रहना चाहिए

पिछले दो दिनों में मैंने महिला पुरुष संबंधों के विषय में हमारे धर्म गुरुओं और राजनेताओं की भूमिका पर आशिक चर्चा की है आज मैं इस चर्चा को समाप्त करूंगा। प्राकृतिक रूप से मुझे यह जानकारी है की महिला पुरुष के व्यक्तिगत शारीरिक संबंधों के मामले में यह प्राकृतिक नियम है कि पुरुष को हमेशा आक्रामक और महिला को आकर्षक रहना चाहिए। यह दोनों बातें दोनों के व्यक्तिगत स्वभाव में होनी चाहिए अर्थात यदि पुरुष आकर्षण बन जाएगा तो यह प्रकृति विरुद्ध है महिला अगर आक्रामक स्वभाव की बनेगी तब भी यह प्रकृति विरुद्ध है। लेकिन मैं पिछले लंबे समय से देख रहा हूं कि हमारे धर्मगुरु और राजनेता दोनों ही इस दिशा में प्रकृति विरुद्ध कार्य कर रहे हैं। हमारे धर्मगुरु महिलाओं को समझाते हैं की आप आकर्षक ना हो आपके कपड़े ऐसे हो आपका रहने सहन ऐसा हो कि आपके स्वभाव में आकर्षण ना रहे। दूसरी ओर हमारे राजनेता महिलाओं को यह भी समझाते हैं कि आप कराते सीखिए आपका स्वभाव आक्रामक होना चाहिए आपको सुरक्षा करने की ट्रेनिंग दी जानी चाहिए। इस तरह हम महिलाओं को क्या दिशा देना चाहते हैं यह हम खुद क्लियर नहीं है । एक तरफ हम महिलाओं को आक्रामक बनाना चाहते हैं दूसरी तरफ हम पुरुषों को आक्रामकता छोड़ने की सलाह देते हैं। मेरी यह सलाह है कि इस संबंध में धर्म गुरुओं और राजनेताओं को बिल्कुल बाहर हो जाना चाहिए । यह मामला व्यक्तिगत और पारिवारिक है परिवार तय करेगा इस परिवार की किस महिला को आकर्षक होना चाहिए और किसको आक्रामक होना चाहिए परिवार तय करेगा कि पुरुष को क्या करना चाहिए लेकिन हमारे समाज में यह धर्मगुरु और राजनेता कुछ जानते नहीं है और अनावश्यक सामाजिक व्यवस्था में हस्तक्षेप करते हैं। मेरा फिर से निवेदन है कि सामान्यतया महिलाओं को आकर्षक और पुरुषों को आक्रामक होना चाहिए। विशेष परिस्थिति में परिवार दोनों के बारे में अलग-अलग सोच सकता है। धर्म गुरुओं और राजनेताओं को इस चर्चा से बाहर हो जाना चाहिए।

बजरंग मुनि

अमेरिका से हिंदुस्तान तक मगजमारी कर रहे विद्वान

@ अनुराग पाठक

व्लादीमीर पुतिन ने अलास्का में बाज़ी मारी या डोनाल्ड ट्रंप ने इसे लेकर अमेरिका से हिंदुस्तान तक विद्वान मगजमारी कर रहे हैं। दूसरी तरफ ज़ेलेंस्की की जान अटकी पड़ी थी कि ट्रंप किसी ऐसी बात पर राज़ी ना हो जाएं जिसे मानना यूक्रेन के लिए मुश्किल हो। फिलहाल दरवाज़े के पीछे कुछ बातें ऐसी हुई हैं जिन्हें ट्रंप अब सोमवार को ज़ेलेंस्की से डिस्कस करना चाहते हैं। सब ठीक रहा तो मुमकिन है अगली और ज्यादा निर्णायक मुलाकात मॉस्को में हो या अगर फिर तीनों नेता एक साथ बैठें तो संभव है एक बार और अमेरिका में हो। नई दिल्ली को भी चैन आया क्योंकि कोई भी पक्ष मुलाकात को फेल नहीं कह रहा। इस वक्त सीन ऐसा है कि ट्रंप अपनी बात मनवाना पुतिन से चाह रहे हैं और ना मानने पर बांह प्रधानमंत्री मोदी की मरोड़ रहे हैं। वैसे भारत ने इस बीच ब्राज़ील के लूला का आग्रह दरकिनार कर दिया जिसमें वो ब्रिक्स देशों से डीडॉलराइज़ेशन के लिए कह रहे हैं। चीन और भारत ने सार्वजनिक तौर पर इससे इनकार किया है, वो अलग बात है कि खुद अमेरिकी प्रशासन समझ चुका कि ट्रंप ने जिस तरह की हायतौबा मचाई उसके बाद दुनिया डॉलर के विकल्प खोजेगी ही। देर सवेर कई देश खुलकर डॉलर से दूर जाएंगे। फिलहाल भारत अमेरिका की हिटलिस्ट में नहीं रहना चाहता इसलिए डीडॉलराइज़ेशन जैसा शब्द बोलकर भी ट्रंप को चिढ़ाना नहीं चाहता। अभी तो भारत इससे ही खुश होगा कि ट्रंप पुतिन की लाइन पर चलने लगे हैं। कहां तो वो तुरंत सीज़फायर के मंत्रजाप में जुटे थे, और कहां अलास्का से लौटकर फाइनल पीस डील वाले पुतिन के जुमले को दोहराने लगे। फ्रांस और जर्मनी भी अलास्का मीट से पहले यही कह रहे थे कि ट्रंप तुरंत सीज़फायर के उद्देश्य को पूरा करेंगे। अब ट्रंप ने उनको टि ली ली कर दिया है और फिर पुतिन की साइड दिखने लगे हैं। डर अपने को ज़ेलेंस्की का है जो व्हाइट हाउस जा रहे हैं लेकिन पिछली बार की डांट डपट को भूले नहीं होंगे। तब तो ट्रंप पुतिन से मिले नहीं थे और इस बार मिल जुलकर उनके सुर में सुर मिलाते हुए ज़ेलेंस्की का इंतज़ार कर रहे हैं।

जुबानी तीर

"यह दिन इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि हम भारत के लोग आज अपने अधिकारों, सांविधानिक संस्थाओं की सुरक्षा, सामाजिक न्याय, आर्थिक सशक्तीकरण और भाईचारे के लिए संघर्ष कर रहे हैं।

मल्लिकार्जुन खरगे (कांग्रेस अध्यक्ष)

"स्वतंत्रता सत्य, समानता और भाईचारे पर आधारित राष्ट्र के निर्माण का संकल्प है इस अनमोल धरोहर के गौरव और सम्मान की रक्षा करना हम सभी का कर्तव्य है। जय हिंद, जय भारत!

राहुल गांधी (नेता प्रतिपक्ष, लोकसभा)

"कांग्रेस अब भारत की नहीं, पाकिस्तान और चीन की भाषा बोल रही है। राहुल गांधी विदेशों में जाकर देश की छवि खराब करते हैं और अब सोशल मीडिया पर भी ऐसे हैशटैग चलाए जा रहे हैं जो दुश्मन ताक़तों के मंसूबों को बल देते हैं। यह कांग्रेस का देशविरोधी चरित्र साफ़ दिखाता है।

विश्वास सारंग (केंद्रीय नेता)

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. महिमा मक्कर द्वारा एच0टी0 मीडिया, प्लॉट नं. 8, उद्योग विहार, ग्रेटर नोएडा-9 उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं जी. एफ. 5/115, गली नं. 5 संत निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009 से प्रकाशित । संपादकः महिमा मक्कर, RNI No. DELHI/2019/77252, संपर्क 011-43563154

विज्ञापन एवं वार्षिक सब्सक्रिप्शन के लिए ऑफिस के पते पर सम्पर्क करें या फिर इन नम्बरों - 9667793987 या 9667793985 पर बात करें या इस पर media@bharatshri.com ईमेल करें।

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम
भारत श्री

लो ब्लड प्रेशर को नियंत्रित करने के आयुर्वेदिक तरीके

@ डॉ महिमा मक्कर

आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में हाई ब्लड प्रेशर की चर्चा अक्सर सुनने को मिलती है, लेकिन इसका उल्टा पहलू यानी लो ब्लड प्रेशर या हाइपोटेंशन (Hypotension) भी उतना ही गंभीर स्वास्थ्य संकट है। आमतौर पर जब किसी व्यक्ति का ब्लड प्रेशर 90/60 mmHg से नीचे चला जाता है तो उसे लो ब्लड प्रेशर माना जाता है। इससे चक्कर आना, कमजोरी, थकान, धुंधला दिखना और बेहोशी जैसे लक्षण सामने आते हैं। आधुनिक चिकित्सा में इसके लिए तत्काल दवाएं और फ्लूड्स दिए जाते हैं, लेकिन आयुर्वेदिक दृष्टिकोण शरीर को भीतर से संतुलित कर दीर्घकालीन समाधान देने पर जोर देता है।

आयुर्वेद का मानना है कि शरीर में वात, पित्त और कफ — इन तीनों दोषों का असंतुलन ही रोगों की जड़ है। लो ब्लड प्रेशर के मामलों में प्रायः वात और पित्त दोष की गड़बड़ी देखी जाती है।

लो ब्लड प्रेशर के कारण

पोषण की कमी: लंबे समय तक भोजन में पौष्टिक तत्वों की कमी से रक्त संचार कमजोर होता है।

पानी की कमी: शरीर में डिहाइड्रेशन के कारण ब्लड वॉल्यूम घट जाता है।

लंबी बीमारी या संक्रमण: टाइफाइड, टीबी, हार्मोनल समस्याएं भी कारण बनती हैं।

तनाव और नींद की कमी: मानसिक दबाव भी रक्तचाप को प्रभावित करता है।

अत्यधिक दवा का सेवन: हाई ब्लड प्रेशर या दिल की दवा का अधिक असर भी प्रेशर गिरा देता है।

आयुर्वेदिक दृष्टिकोण

आयुर्वेद में रक्तसंचार को संतुलित करने और हृदय की शक्ति बढ़ाने के लिए जड़ी-बूटियों, आहार और जीवनशैली को महत्व दिया गया है।

1. आहार संबंधी सुझाव

नमक का संतुलित सेवन – लो बीपी वाले लोगों को सामान्य से थोड़ा अधिक नमक लेना चाहिए। आयुर्वेद में समुद्री नमक (सैंधा नमक) को बेहतर माना गया है।

गुड़ और किशमिश – गुड़ शरीर में ऊर्जा और खून की कमी को पूरा करता है। किशमिश का पानी पीना लो बीपी के लिए लाभकारी है।

अनार और चुकंदर – आयुर्वेद में इन्हें रक्तवर्धक फल माना गया है। अनार का रस और चुकंदर का सेवन रक्त को शुद्ध करता है और प्रेशर को स्थिर बनाए रखता है।

तुलसी और शहद – सुबह खाली पेट तुलसी के पांच पत्ते और एक चम्मच शहद लेने से हृदय की शक्ति बढ़ती है।

कॉफी और ग्रीन टी – सीमित मात्रा में गर्म पेय रक्त प्रवाह को बढ़ाते हैं और प्रेशर संतुलित करते हैं।

2. घरेलू नुस्खे

अदरक और शहद – अदरक रक्त संचार को सक्रिय करता है। आधा चम्मच अदरक का रस और शहद मिलाकर लेने से फायदा होता है।

मुलेठी – आयुर्वेदिक ग्रंथों में मुलेठी को लो बीपी के लिए औषधि बताया गया है। इसका काढ़ा पीने से ब्लड प्रेशर सामान्य होता है।

अश्वगंधा और शतावरी – ये दोनों जड़ी-बूटियां हृदय को बल देती हैं और थकान दूर करती हैं। अश्वगंधा पाउडर को दूध के साथ लेने से लाभ मिलता है।

गिलोय – रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने वाली गिलोय भी रक्त संचार को नियंत्रित रखती है।

3. योग और प्राणायाम

आयुर्वेद केवल आहार ही नहीं, बल्कि जीवनशैली पर भी बल देता है।

अनुलोम-विलोम और भ्रामरी प्राणायाम – यह नाड़ी शुद्धि कर रक्त प्रवाह को संतुलित करते हैं।

सूर्य नमस्कार – पूरे शरीर में रक्त परिसंचरण को सक्रिय करता है।

शवासन और ध्यान – तनाव घटाकर मन को शांत करते हैं, जिससे लो बीपी नियंत्रित होता है।

4. जीवनशैली में परिवर्तन

अचानक खड़े होने से बचें – लो बीपी वाले लोगों को धीरे-धीरे उठना चाहिए।

दिनभर पर्याप्त पानी पिएं – डिहाइड्रेशन से बचना जरूरी है।

छोटे-छोटे भोजन करें – एक बार ज्यादा भोजन करने की बजाय दिनभर में हल्का भोजन लें।

तेल मालिश (अभ्यंग) – आयुर्वेद में तिल के तेल से मालिश करने की परंपरा है। इससे रक्त प्रवाह बेहतर होता है।

विशेषज्ञों की राय

आयुर्वेदाचार्य मानते हैं कि लो ब्लड प्रेशर को केवल दवा से नहीं, बल्कि दिनचर्या और आहार से स्थायी रूप से नियंत्रित किया जा सकता है। उनका कहना है कि मरीज को संतुलित आहार, समय पर नींद और मानसिक शांति की आवश्यकता होती है।

दिल्ली स्थित एम्स के कार्डियोलॉजी विभाग के एक विशेषज्ञ भी मानते हैं कि हल्के लो बीपी के मामलों में आयुर्वेदिक और घरेलू उपचार प्रभावी साबित होते हैं, लेकिन अगर स्थिति गंभीर हो तो चिकित्सकीय परामर्श अनिवार्य है।

सावधानियां

अगर लो बीपी के साथ बार-बार बेहोशी, तेज कमजोरी या सीने में दर्द हो तो तुरंत डॉक्टर से संपर्क करें।

गर्भवती महिलाओं और बुजुर्गों में यह स्थिति अधिक खतरनाक हो सकती है।

किसी भी आयुर्वेदिक दवा का सेवन शुरू करने से पहले योग्य चिकित्सक से परामर्श जरूरी है।

लो ब्लड प्रेशर को अक्सर लोग सामान्य कमजोरी समझकर नजरअंदाज कर देते हैं। लेकिन आयुर्वेद हमें बताता है कि यह शरीर के असंतुलन का संकेत है। संतुलित आहार, जड़ी-बूटियां, योग और जीवनशैली में छोटे-छोटे बदलाव करके इसे नियंत्रित किया जा सकता है। सबसे अहम बात यह है कि शरीर की भाषा को समझें और समय रहते ध्यान दें। तभी हम स्वस्थ और संतुलित जीवन जी सकते हैं।

संत नागा निरांकरी जी का दिव्य जीवन

संतों और महापुरुषों की महिमा का बखान करना आत्मा के लिए परम सौभाग्य की बात है। संत नागा निरांकरी जी एक ऐसे परम अवधूत थे, जिनका जीवन सत्य, तप और भक्ति का अनुपम संगम था। उनकी साधना, उनके विचार और उनकी रचनाएँ आज भी भक्तों के हृदय में आलौकिक शांति और प्रेम का संचार करती हैं। इस लेख में हम उनके पवित्र जीवन, उनकी तपस्या और उनकी अमर रचना ब्रह्मवाणी के बारे में जानेंगे।

प्रारंभिक जीवन: राजसी वैभव में जन्म, फिर वैराग्य की ओर

संत नागा निरांकरी जी का जन्म विक्रमी सोलहवीं या सत्रहवीं शताब्दी में पंजाब प्रांत के अठीलपुर नगर में एक समृद्ध राजपरिवार में हुआ। यह नगर भगवती रावी नदी के तट पर बसा था, जो अब इतिहास के पन्नों में कहीं खो गया है। उनकी माता संतानहीन थीं और एक संत के आशीर्वाद से उन्हें पुत्ररत्न की प्राप्ति हुई। संत ने आशीर्वाद देते हुए कहा था कि पुत्र का जन्म तो होगा, परंतु यदि उसके सिर पर छुरा फिरा तो वह वैराग्य की राह पकड़ लेगा।

जन्म के समय नागा निरांकरी जी का शरीर अत्यंत छोटा था, जिसके कारण उनके पिता और पितामह को चिंता हुई कि यह बालक राजकाज कैसे संभालेगा। लेकिन माता की ममता ने उन्हें सांत्वना दी कि उनकी संतान जीवित रहेगी, और यदि राजकाज की क्षमता न भी हो, तो फकीरी का सामर्थ्य तो होगा ही।

नागा निरांकरी जी का बचपन राजसी वैभव और सुख-सुविधाओं के बीच बीता। राजप्रासाद के पीछे एक रमणीय सरोवर था, जहाँ वे घंटों गहन चिंतन में डूबे रहते। कभी-कभी बालमंडली के साथ खेलते, पर उनकी आत्मा में जन्म-जन्मांतर के पुण्य और दैवीय गुणों का प्रकाश स्पष्ट झलकता था। उनकी माता उन्हें बहुमूल्य आभूषणों से सजाकर खेलने भेजती थीं, पर सांसारिक वस्तुओं में उनकी कोई आसक्ति न थी। एक बार उन्होंने अपनी कीमती हीरे की अंगूठी बिना माँगे ही एक भिक्षुक को दे दी। दूसरी बार एक मूल्यवान शाल खेलते समय कहीं भूल आए। यह उनके वैराग्य और दानशीलता का प्रारंभिक परिचय था।

वैराग्य और तप की राह

जब नागा निरांकरी जी मात्र दस-बारह वर्ष के थे, पंजाब पर मुस्लिम आक्रमण हुआ। उनके पिता युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुए, और उनकी माता कुलपरंपरा के अनुसार सती हो गईं। माता ने अंतिम बार अपने पुत्र को प्यार किया, उनकी पीठ पर हाथ फेरा और ममता भरी नजरों से देखकर परलोक सिधार गईं। इस दुखद घटना के बाद नागा निरांकरी जी ने राजप्रासाद का त्याग कर दिया और एक संत के आश्रम में शरण ली। वहाँ संत ने उनका नाम हरनामदास रखा।

आश्रम में संत कुछ औषधियों के प्रयोग से चाँदी बनाकर अपनी और शिष्यों की जीविका चलाते थे, पर नागा निरांकरी जी इससे दूर रहकर बालक्रीड़ा में मग्न रहते। कुछ समय बाद उन्होंने आश्रम भी छोड़ दिया और तप के लिए निकल पड़े। बारह वर्ष तक वे मौन व्रत में रहे, नग्न-धड़ग दिगंबर रूप में भ्रमण करते हुए। लोग उन्हें नागा बाबा कहकर पुकारने लगे। इस दौरान वे बच्चों

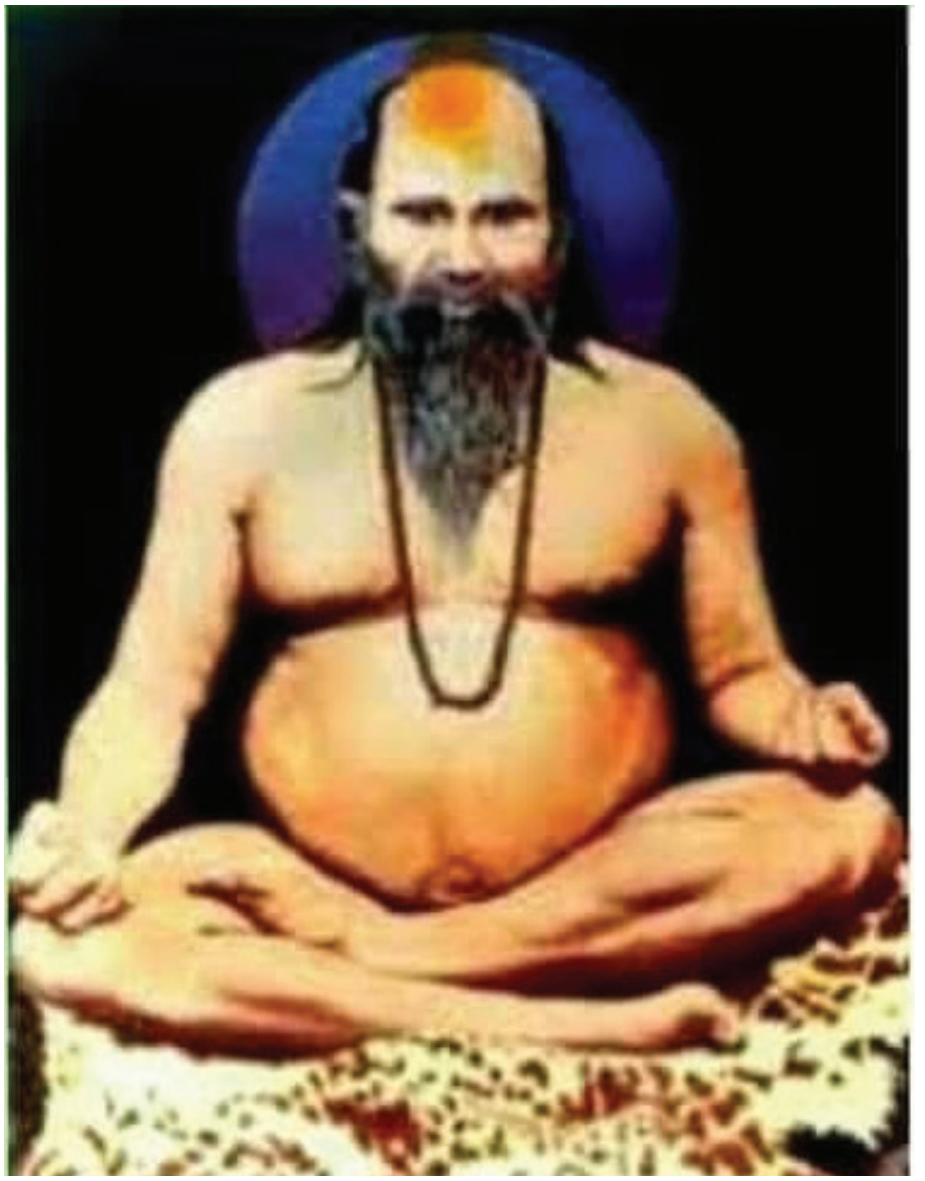

के साथ खेलते, पर उनकी साधना का स्वरूप इतना गहन था कि इसका रहस्य केवल उनकी कृपा से ही समझा जा सकता है।

साधना का अनुपम स्वरूप

नागा निरांकरी जी की साधना का स्वरूप अनोखा था। वे बच्चों के साथ खेलते, पर पूरी तरह उनके भरोसे रहते। बच्चे उन्हें बुलाते तो बोलते, खिलाते तो खाते, और जहाँ छोड़ जाते, वहीं बैठे रहते। भूख-प्यास की चिंता उन्हें छूती तक न थी। यदि कोई भोजन देता, तो खा लेते, अन्यथा तप में लीन रहते। उनकी अवधूत वृत्ति ऐसी थी कि वे बच्चों की हर चेष्टा को स्वीकार करते। कभी बच्चे उन्हें पानी में गिरा देते, कभी बालू में सुला देते, पर वे सबकुछ सहज भाव से स्वीकार करते। उनकी रक्षा अदृश्य भगवत्शक्ति करती थी।

उनका तप इतना गहन था कि वे ध्यान में लोक-लोकांतर में विचरण करते और अपने निकटवर्ती शिष्यों को उन स्थानों की विचित्र घटनाओं का वर्णन सुनाते। एक बार उन्होंने अपने प्रिय शिष्य संत पलक निधि 'पथिक' जी से कहा, "हमें ध्यान में श्री लक्ष्मी जी ने सर्वत्र विजयी होने का वरदान दिया है। हमारे हाथ में उनकी दी हुई छाप है, जिसे देखकर कोई भी शक्ति हमें रोक नहीं सकती। भगवान ने हमें अमृत का प्याला पिलाया, इसलिए हम किसी के मारे नहीं मर सकते, स्वेच्छा से ही देह त्याग सकते हैं।" उनकी यह बात उनकी दैवीय शक्ति और अवधूत अवस्था का प्रमाण थी।

ब्रह्मवाणी: अमर रचना

संत नागा निरांकरी जी की सबसे प्रसिद्ध रचना है ब्रह्मवाणी, जिसमें उन्होंने अपने आध्यात्मिक अनुभवों को पदबद्ध किया। यह रचना संत साहित्य की अनमोल निधि है। ब्रह्मवाणी में उनकी गहन आत्मानुभूति, सत्य की खोज और भक्ति का भाव स्पष्ट झलकता है। इस रचना में उन्होंने संत कबीर और गुरु नानक के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त की है। एक पद में वे कहते हैं:

भजले श्रीनागा निखान दीवाने मन।

जागो श्याम अब भोर हुआ है, गुरु नानक करते फेरी दीवाने मन।

यह पद गुरु नानक के प्रति उनकी गहरी श्रद्धा और उनके दर्शन का साक्ष्य देता है। ऐसा माना जाता है कि उन्होंने गुरु नानक को फेरी लगाते देखा था। ब्रह्मवाणी में यवनकालीन ऐतिहासिक विवरण भी मिलते हैं, जो उस समय के सामाजिक और आध्यात्मिक परिदृश्य को दर्शाते हैं।

उन्होंने कहा था कि पुस्तकें पढ़ने से सत्य ज्ञान नहीं मिलता, बल्कि मन लगाकर भजन करने से हृदय निर्मल होता है और सत्य का प्रकाश प्रकट होता है। यह उनकी रचना का मूल संदेश है, जो भक्तों को सच्चाई और शांति की राह दिखाता है।

अयोध्या और असोथर में तप

नागा निरांकरी जी ने अपने जीवन का अधिकांश समय उत्तर प्रदेश के प्रयाग, कानपुर और फतेहपुर जनपदों में तप करते हुए बिताया। विशेष रूप से अयोध्या और फतेहपुर के असोथर में उनकी तपस्या का विशेष महत्व है। अयोध्या में उन्होंने अपने जीवन का आधा भाग तप में बिताया। इसके बाद वे असोथर पहुँचे, जो एक प्राचीन और ऐतिहासिक नगर है। यहाँ उन्होंने एक निर्जन कंदरा में घोर तप किया।

असोथर में उनकी कीर्ति नागा बाबा असोथर के नाम से फैली। स्थानीय लोग पहले उनकी अवधूत वृत्ति को देखकर उन्हें पागल समझते थे, पर धीरे-धीरे उनकी महानता के सामने नतमस्तक हो गए। एक बार एक थानेदार ने उनकी नग्न अवस्था पर सवाल उठाया, तो उन्होंने उसकी बात को ही दोहरा दिया। यह उनकी वाणी प्रतिध्वनि व्रत का हिस्सा था। थानेदार को बाद में उनकी महिमा का ज्ञान हुआ और उसने प्रणाम कर क्षमा माँगी।

असोथर की राजरानी उनकी भक्त थीं। एक बार जब थानेदार ने उन्हें अस्थायी कारागार में डाल दिया, तो रात में नागा बाबा ने जोर-जोर से 'अलख' का उच्चारण किया। उनकी आवाज सुनकर रानी ने थानेदार को फटकार लगाई और उन्हें मुक्त करवाया।

दैवीय शक्ति और कैलाश धाम की प्राप्ति

नागा निरांकरी जी की साधना इतनी प्रबल थी कि उनके अनुयायियों में यह मान्यता थी कि उन्हें परम गुरु शुक्राचार्य ने कैलाश धाम की प्राप्ति में सहायता की थी। उनकी शारीरिक अवस्था कभी नहीं बदली; वे सदा हृष्ट-पुष्ट और स्वस्थ रहे। ऐसा प्रतीत होता था कि वे दिव्य शक्ति के जीवंत स्वरूप थे।

उन्होंने अपने परम धाम गमन की बात पहले ही बता दी थी। पाली की कुटी के सामने एक चने का खेत था, जहाँ उन्होंने कहा, "हमने ध्यान में देखा है कि यहीं लोग हमारे शरीर को चिता में जलाएँगे।" उनके कथन के अनुसार, संवत् 1993 की कार्तिक शुक्ल चतुर्दशी को रात में उन्होंने कैलाश धाम की प्राप्ति की। उनके शरीर का दाह-संस्कार उसी चने के खेत में हुआ, और वहाँ उनका भव्य समाधि मंदिर बना, जो आज भी सत्य, शांति और प्रेम का संदेश देता है।

संदेश और विरासत

संत नागा निरांकरी जी का जीवन एक तपस्वी, अवधूत और परम भक्त का आदर्श है। वे जीवमात्र के प्रति दयालु थे, दीन-दुखियों की सेवा और पापियों के उद्धार के लिए उन्होंने शरीर धारण किया था। उनकी रचना ब्रह्मवाणी संत साहित्य की अमर धरोहर है, जो भक्तों को सत्य और शांति की राह दिखाती है। उनका समाधि मंदिर आज भी भक्तों के लिए तीर्थस्थल है। वहाँ दर्शन मात्र से मन शांति के गहन सागर में डूब जाता है, और आत्मा सत्यामृत का रसास्वादन करती है। संत नागा निरांकरी जी का जीवन हमें सिखाता है कि सच्ची साधना और भक्ति से ही परम सत्य की प्राप्ति संभव है।

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम
भारत श्री

कठुआ में बादल फटने की भयानक घटना

सात मौतें, कई जिंदगियां खतरे में

जम्मू-कश्मीर के कठुआ जिले में एक बड़ी प्राकृतिक आपदा आई है। शनिवार और रविवार की रात में तीन जगहों पर बादल फट गए। इससे बाढ़ आई और भूस्खलन हुआ। सात लोग मारे गए, जिनमें पांच बच्चे हैं। कई लोग घायल हुए। यह घटना जोद घाटी गांव, राजबाग इलाके और जंगलोट में हुई। लोग बहुत डर गए हैं। घर टूट गए, सड़कें बंद हो गईं। रेल की पटरी भी खराब हो गई। यह खबर पूरे देश में फैल गई है। सरकार मदद कर रही है। लेकिन ऐसी घटनाएं क्यों हो रही हैं, इस पर सोचना जरूरी है।

यह घटना कठुआ में हुई, जो जम्मू-कश्मीर का एक जिला है। यहां पहाड़ी इलाका है। बारिश बहुत तेज होती है। इस बार बादल फटने से पानी की तेज धारा आई। गांव के लोग सो रहे थे। अचानक पानी आया और सब बह गया। कुछ दिन पहले किश्तवार में भी ऐसा हुआ था, जहां साठ से ज्यादा लोग मारे गए। अब कठुआ में फिर वही हुआ। मौसम विभाग कहता है कि बारिश ज्यादा हो रही है। जलवायु परिवर्तन की वजह से ऐसी आपदाएं बढ़ रही हैं। लोग कहते हैं कि जंगल कट रहे हैं, इसलिए मिट्टी कमजोर हो गई है। कठुआ के लोग गरीब हैं। वे किसानी करते हैं या मजदूरी। ऐसी घटना से उनका सब कुछ चला गया। बच्चे स्कूल जाते थे, अब उनके घर ही नहीं बचे। सरकार को जल्दी मदद पहुंचानी चाहिए। नहीं तो लोग भूखे मर जाएंगे।

घटना की पूरी कहानी: रात में आई तबाही

यह सब शनिवार रात को शुरू हुआ। कठुआ जिले में तीन जगहों पर बादल फटे। पहली जगह जोद घाटी गांव है, जो राजबाग इलाके में है। दूसरी जंगलोट इलाका और तीसरी कुछ और जगहें जैसे बागड़, चंगड़ा, दिलवान और हुतली। रात के समय तेज बारिश हुई। अचानक बादल फट गए। पानी की तेज लहर आई। यह फ्लैश फ्लड कहलाती है। गांव के लोग सो रहे थे। उन्हें पता ही नहीं चला। पानी ने घरों को बहा दिया। कुछ घर मिट्टी में दब गए।

अधिकारियों ने बताया कि चार लोग पहले मारे गए। बाद में तीन और लाशें मिलीं। कुल सात मौतें हो गईं। इनमें पांच बच्चे हैं, जिनकी उम्र दो से पंद्रह साल है। यह बहुत दुख की बात है। बच्चे खेलते थे, अब वे नहीं हैं। मरने वालों में रेणु देवी, राधिका जैसी महिलाएं और बच्चे हैं।

यह घटना किश्तवार की तरह है। वहां भी बादल फटे थे। यहां ऊझ नदी का पानी बढ़ गया। वह खतरे के निशान के पास है। सहार खड नदी भी उफान पर है। सड़कें बंद हैं। राष्ट्रीय राजमार्ग एनएच चौवालीस पर पानी भर गया। रेल की पटरी टूट गई। ट्रेनें रुक गईं। पुलिस स्टेशन में पानी घुस गया। इंडस्ट्रियल एरिया डूब गया। केंद्रीय विद्यालय भी प्रभावित हुआ। लोग कहते हैं कि यह जलवायु परिवर्तन की वजह से है। बारिश का पैटर्न बदल गया है। पहले इतनी तेज बारिश नहीं होती थी।

गांव के लोग डरे हुए हैं। वे कहते हैं कि रात में नींद नहीं आ रही। बच्चे रो रहे हैं। बुजुर्गों को याद है कि पहले ऐसी घटनाएं कम होती थीं। अब हर साल होती हैं। सरकार को चेतावनी सिस्टम लगाना चाहिए। मोबाइल पर अलर्ट आना चाहिए। ताकि लोग पहले ही सुरक्षित जगह चले जाएं। यह घटना दिखाती है कि प्रकृति कितनी शक्तिशाली है। इंसान उसके आगे कुछ नहीं। लेकिन हम तैयार रहकर जान बचा सकते हैं।

अब सवाल है कि कितने लोग प्रभावित हुए। सैकड़ों लोग बेघर हो गए। उनके घर बह गए। खेत बर्बाद हो गए। पशु मर गए। स्कूल बंद हैं। अस्पताल में जगह कम है। लोग बाहर बैठे हैं। यह एक बड़ी समस्या है। मीडिया में खबरें आ रही हैं। लोग दान दे रहे हैं। लेकिन स्थानीय लोग सबसे ज्यादा मदद कर रहे हैं। वे अपने पड़ोसियों को बचा रहे हैं। यह एकता की मिसाल है।

मौतें और नुकसान: दिल दहलाने वाली तस्वीर

इस आपदा में सात लोग मारे गए। पांच बच्चे हैं। यह बहुत दर्दनाक है। बच्चे परिवार की उम्मीद होते हैं। अब उनके मां-बाप कैसे जिएंगे। घायल छह हैं। कुछ की हालत गंभीर है। वे पठानकोट के अस्पताल में हैं। हेलिकॉप्टर से उन्हें ले जाया गया।

नुकसान बहुत बड़ा है। कई घर दब गए। सड़कें धंस गईं। पुल टूट गए। रेलवे स्टेशन प्रभावित। पुलिस स्टेशन में पानी भर गया। इंडस्ट्रियल एरिया में फैक्टरियां बंद हैं। नेशनल हाईवे पर ट्रैफिक रुका। लोग घंटों इंतजार कर रहे हैं। ऊझ नदी खतरे पर है। अगर और बारिश हुई तो बाढ़ आ सकती है।

गांव के लोग कहते हैं कि उनका सब कुछ चला गया। कपड़े, अनाज, पैसे। अब वे क्या खाएंगे। बच्चे भूखे हैं। महिलाएं रो रही हैं। बुजुर्ग बीमार हो गए। यह एक मानवीय संकट है। सरकार को तुरंत राशन पहुंचाना चाहिए। टेंट लगाने चाहिए। पानी और दवाई देनी चाहिए। नहीं तो बीमारियां फैल सकती हैं।

यह घटना किश्तवार से जुड़ी है। वहां साठ से ज्यादा मौतें हुईं। अब कठुआ में सात। कुल मिलाकर जम्मू-कश्मीर में सौ से ज्यादा मौतें हो गईं। यह चिंता की बात है। विशेषज्ञ कहते हैं कि ग्लोबल वार्मिंग से बारिश बढ़ रही है। जंगल कम हो रहे हैं। मिट्टी बह रही है। इसलिए भूस्खलन होता है। सरकार को जंगल लगाने चाहिए। बांध बनाने चाहिए। लेकिन यह लंबा काम है। अभी तो मदद जरूरी है।

लोगों की कहानियां सुनकर दिल भर आता है। एक महिला ने बताया कि उसका बच्चा पानी में बह गया। वह चीखती रही लेकिन बचा नहीं सकी। एक आदमी का घर दब गया। वह बाहर था, परिवार अंदर। अब वह अकेला है। ऐसी कहानियां बहुत हैं। हमें इनकी मदद करनी चाहिए। दान देना चाहिए। लेकिन सावधानी से, ताकि पैसा सही जगह पहुंचे।

बचाव कार्य: सेना और पुलिस की मेहनत

बचाव काम जल्दी शुरू हुआ। पुलिस और एसडीआरएफ की टीम पहुंची। वे स्थानीय लोगों के साथ मिलकर काम कर रहे हैं। एनडीआरएफ भी आई। सेना ने हेलिकॉप्टर भेजे। छह घायलों को पठानकोट ले गए। बचाव जारी है। कुछ लोग अभी फंसे हैं। बारिश हो रही है, इसलिए मुश्किल है।

एसएसपी शोभित सक्सेना ने बताया कि सात लाशें मिलीं। बचाव टीम दिन-रात काम कर रही है। संघीय मंत्री जितेंद्र सिंह ने बात की। उन्होंने मदद का वादा किया। मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने दुख जताया। उन्होंने राहत का आदेश दिया। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने एलजी और सीएम से बात की। उन्होंने मोदी सरकार की मदद का भरोसा दिया। एनडीआरएफ टीम साइट पर है।

स्थानीय लोग भी मदद कर रहे हैं। वे रस्सियां बांधकर लोगों को निकाल रहे हैं। खाना बांट रहे हैं। यह अच्छी बात है। लेकिन खतरा है। अगर और भूस्खलन हुआ तो और मौतें हो सकती हैं। इसलिए सावधानी जरूरी है। सरकार ने चेतावनी दी है। नदियों से दूर रहो। पहाड़ी इलाकों में मत जाओ। फ्लैश फ्लड आ सकती है।

बचाव में तकनीक का इस्तेमाल हो रहा है। ड्रोन से इलाका देखा जा रहा है। हेलिकॉप्टर से सामान गिराया जा रहा है। लेकिन मौसम खराब है। बादल हैं, इसलिए उड़ान मुश्किल। फिर भी टीम मेहनत कर रही है। यह दिखाता है कि भारत की सेना और पुलिस कितनी बहादुर है। वे अपनी जान जोखिम में डालकर दूसरों को बचाते हैं। हमें उनका सम्मान करना चाहिए।

अब सवाल है कि बचाव कितने दिन चलेगा। अगर बारिश रुकी तो जल्दी खत्म हो जाएगा। लेकिन अगर जारी रही तो लंबा खिंचेगा। सरकार को प्लान बी बनाना चाहिए। ज्यादा टीम भेजनी चाहिए। विदेश से मदद लेनी चाहिए अगर जरूरत हो। लेकिन अभी तो स्थानीय स्तर पर काम हो रहा है।

सरकार की मदद और आगे की योजना: उम्मीद की किरण

सरकार ने तुरंत कदम उठाए। मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने दुख जताया। उन्होंने परिवारों को सांत्वना दी। घायलों के लिए प्रार्थना की। प्रशासन को राहत देने का आदेश दिया। एक्स ग्रेशिया का ऐलान किया। मरने वालों के परिवार को पैसे मिलेंगे। घायलों को भी मदद।

केंद्रीय मंत्री जितेंद्र सिंह ने एसएसपी से बात की। उन्होंने हेलिकॉप्टर की व्यवस्था की। अमित शाह ने भी मदद का वादा किया। मोदी सरकार हर तरह की सहायता देगी। जम्मू-कश्मीर के लोग हमारे भाई-बहन हैं, उन्होंने कहा। यह अच्छी बात है। राजनीति से ऊपर उठकर मदद हो रही है।

आगे क्या। सरकार को दीर्घकालिक योजना बनानी चाहिए। मौसम चेतावनी सिस्टम लगाना। जंगल लगाना। बांध बनाना। लोगों को ट्रेनिंग देना। ताकि ऐसी घटना में जान बचाई जा सके। जलवायु परिवर्तन पर काम करना। कार्बन कम करना। यह वैश्विक समस्या है। भारत को दुनिया के साथ मिलकर लड़ना चाहिए।

स्थानीय स्तर पर, गांव में स्कूल और अस्पताल बनाना। सड़कें मजबूत करना। पुल नए बनाना। लोगों को बीमा देना। ताकि नुकसान की भरपाई हो। एनजीओ भी मदद कर सकते हैं। वे कैंप लगा सकते हैं। बच्चों को पढ़ा सकते हैं। महिलाओं को रोजगार दे सकते हैं। यह पुनर्वास है।

लोगों को जागरूक करना। टीवी पर कार्यक्रम दिखाना। रेडियो पर बताना। स्कूल में पढ़ाना। ताकि बच्चे समझें कि क्या करना है। यह रोकथाम है। मौतें कम होंगी। कठुआ की घटना से सबक सीखना चाहिए। नहीं तो फिर ऐसी आपदाएं आएंगी।

आपदा से सबक: भविष्य की तैयारी

यह घटना हमें सोचने पर मजबूर करती है। क्यों ऐसी आपदाएं बढ़ रही हैं। जलवायु परिवर्तन। जंगल कटाई। निर्माण गलत जगह पर। हमें प्रकृति का सम्मान करना चाहिए। जंगल बचाना। प्लास्टिक कम करना। साफ-सफाई रखना। तभी ऐसी घटनाएं कम होंगी।

किश्तवार और कठुआ की घटनाएं जुड़ी हैं। दोनों में बादल फटे। मौतें हुईं। नुकसान हुआ। सरकार को पूरे जम्मू-कश्मीर में अलर्ट रखना चाहिए। मानसून में ज्यादा सावधानी। लोगों को ऊंची जगहों पर बसाना। नदियों से दूर। यह योजना जरूरी है।

लोगों की एकता महत्वपूर्ण है। पड़ोसी मदद करें। दान दें। लेकिन अफवाह न फैलाएं। सोशल मीडिया पर सही खबर शेयर करें। यह मदद करता है। मीडिया की भूमिका बड़ी है। वे सच्ची खबरें दें। सरकार पर दबाव डालें। ताकि मदद जल्दी पहुंचे।

रोग निवारण और मानवता की सेवा का अद्भुत अनुभव

प्रभु कृपा दुःख निवारण समागम

भगवान श्री लक्ष्मीनारायण धाम के तत्वावधान में आयोजित किए जाने वाले प्रभु कृपा दुख निवारण समागमों में आने वाले हजारों लोगों को तत्काल अपने अनेकों दुखों, रोगों व कष्टों से मुक्ति मिल जाती है। इस समागमों में जहां विश्व संत महाब्रह्मऋषि श्री कुमार स्वामी जी संगत को दिव्य बीज मंत्र प्रदान करते हैं, वहीं स्वामी जी अवधान द्वारा भी संगत के कष्टों को हर लेते हैं। समागमों में दैवव्य पाश्रर्य तथा सर्व रोग निवारक औषधी से निशुल्क उपचार से हजारों-लाखों लोग लाभ उठाकर अपने यूटीआई, डैंड्रफ व फंगल जैसे असाध्य रोगों से मुक्त हो रहे हैं। हमें हाल ही में हुए अमृतसर के एक समागम में कुछ अनूठे अनुभव सुनने को मिले, जो प्रस्तुत हैं:-

1:- मेरा नाम डाक्टर जगदीप सिंह ओबराय है, मैं चमड़ी रोग विशेषज्ञ हूं। जब मैं स्टूडेंट था, मेरे सिर में रूसी थी, जिससे शरीर में भी एलर्जी बन गई थी, सिर में खारिश होती थी, चेहरे और छाती की चमड़ी लाल हो जाती थी, दवाइयां खाता था, लेकिन कुछ समय बाद दुबारा हो जाती थी, ये क्रम 25 साल चलता रहा। स्वयं स्किन का डाक्टर होते हुए मेरी समस्या का समाधान नहीं हुआ। अंततः मुझे सन 2011 में गुरूदेव जी से अभिमंत्रित औषधी की कृपा मिली, उससे मैने अपने केश धोए, दाड़ी पर लगाई, चेहरे पर और छाती की चमड़ी पर भी लगाई। प्रभु की कृपा से मेरा रोग बिलकुल ठीक हो गया, जो दवाइयों से नहीं हो रहा था। जिस औषधी से मैं रोग मुक्त हुआ, आज वह औषधी, ''सर्व रोग निवारक औषधी'' के नाम से मिलती है। कितनी ही संगत है जिनकी डैंड्रफ, सोराइसिस तक इस औषधी से ठीक हो गई। इसमें भाई मनदीप नागपाल जी का बड़ा योगदान है।

2:- एक बहन ने बताया कि यूटीआई जांच व उपचार शिविर में जाने से पूर्व मुझे इंचिंग होती थी, पानी पड़ता था, चल नहीं सकती थी, लेकिन मिरेकल वाश से कुछ मिनटों में ही बहुत आराम आ गया।

3:- सुमन लता गुरदासपुर ने बताया कि मुझे 24 साल से प्राब्लम है, अब शिविर में मिरेकल वाश से बहुत आराम आ गया है।

4:- एक बहन ने बताया कि मुझे कई सालों से बैक प्राब्लम थी, मिरेकल वी वाश का प्रयोग किया तो ठंडक महसूस हुई। अब बिल्कुल ठीक हूं।

5:- एक बहन ने बताया कि मुझे बार-बार बाथरूम जाना पड़ता था, शिविर में मिरेकल वी वाश केवल प्रयोग के बाद अब एकदम ठीक हो गई हूं।

6:- एक बहन ने बताया कि सिर में बहुत दर्द था। शिविर में मिरेकल वी वाश का प्रयोग करने के बाद सिर एकदम हल्का हो गया।

7:- एक बहन ने बताया कि खुजली की बहुत प्राब्लम थी, मिरेकल वाश से ठीक हो गई।

8:- एक बहन ने बताया कि मुझे कमर में, पेट में और सिर में दर्द था और खारिश थी, मिरेकल वी वाश से मेरी सारी समस्या दूर हो गई।

9:- एक बहन ने बताया कि मुझे कैंसर था। बीते 4 महीने से मिरेकल वी वाश इस्तेमाल कर रही हूं। अब बहुत फर्क है, ठीक हूं।

10:- एक बहन ने बताया कि मुझे 4 साल से एलर्जी थी, समागम में बैठा नहीं जा रहा था, शिविर में मिरेकल वाश का प्रयोग किया और 2 मिनट में ठीक हो गई।

11:- एक बहन ने बताया कि घुटने में दर्द था, कमर में दर्द था, मिरेकल वाश के प्रयोग के बाद दोनो ठीक हो गए।

गुरुदेव की दिव्य कृपा: रोग निवारण और मानवता की अद्भुत सेवा

मेरा नाम डाक्टर विजेता है, मैं एमबीबीएस गायनी हूं। अमृतसर के निशुल्क शिविर में 100 से अधिक बहनो ने यूटीआई जांच कराई। मिरेकल वाश से मिनटों में उनकी बीमारी ठीक हो गई। यूटीआई के कारण बहुत हैं, जैसे वैक्टीरिया, फंगल, वायरल, जो भी कारण थे, मिरेकल वी वाश से एक मिनट में ठीक हो गए। काफी माताएं बहने इस प्राब्लम से गुजरती हैं, इसके कारण पूरे शरीर में बहुत सारी प्राब्लम होती हैं। याददाश्त का कम होना, आंखो की कमजोरी भी यूटीआई की वजह से है। हड्डियों तक इसका असर होता है, मासपेशियां कमजोर होती हैं, यहां तक कि हार्ट अटैक के चांसेस भी यूटीआई की वजह से बढ़ जाते हैं। डिप्रेशन, इंजाइटी, चिढ़चिढ़ापन, सफेद पानी और बहुत सारी प्राब्लम जो माताएं बहने शरमा के बता भी नहीं पाती हैं और बहुत ही गंभीर रूप से जूझती रहती हैं, ऐसे सभी रोगियों को मिरेकल वी वाश से बहुत आराम पड़ा।

विश्व में बज रहा भारत का डंका

पंजाब के भूतपूर्व स्वास्थ्य मंत्री दिवंगत डाक्टर बलदेव राज चावला जी के सुपुत्र डाक्टर राम चावला जी कहते हैं कि उन्हें पिता जी ने बताया था कि गुरू जी के समागम में हजारों लोगों का डैंड्रफ एक दिन में ठीक किया गया, जो बहुत बड़ी बात है। गुरूदेव जी पूरे भारत वर्ष सहित पूरे विश्व को निरोगी करने का काम कर रहे हैं। इसके लिए इनका विश्व के अनेकों देशों में स्वागत होता है। गुरूदेव जी के इस कार्य से भारत वर्ष का नाम पूरे विश्व में ऊंचा हो रहा है। मानवता की जो सेवा गुरूदेव जी और इनका परिवार कर रहा है, उसके लिए हम सब उनके बहुत ऋणी हैं।

बीजेपी बनाम बीजेपी की टक्कर, रूडी ने दर्ज की जीत

राजीव प्रताप रूडी फिर बने कॉन्स्टिट्यूशन क्लब ऑफ इंडिया के सचिव

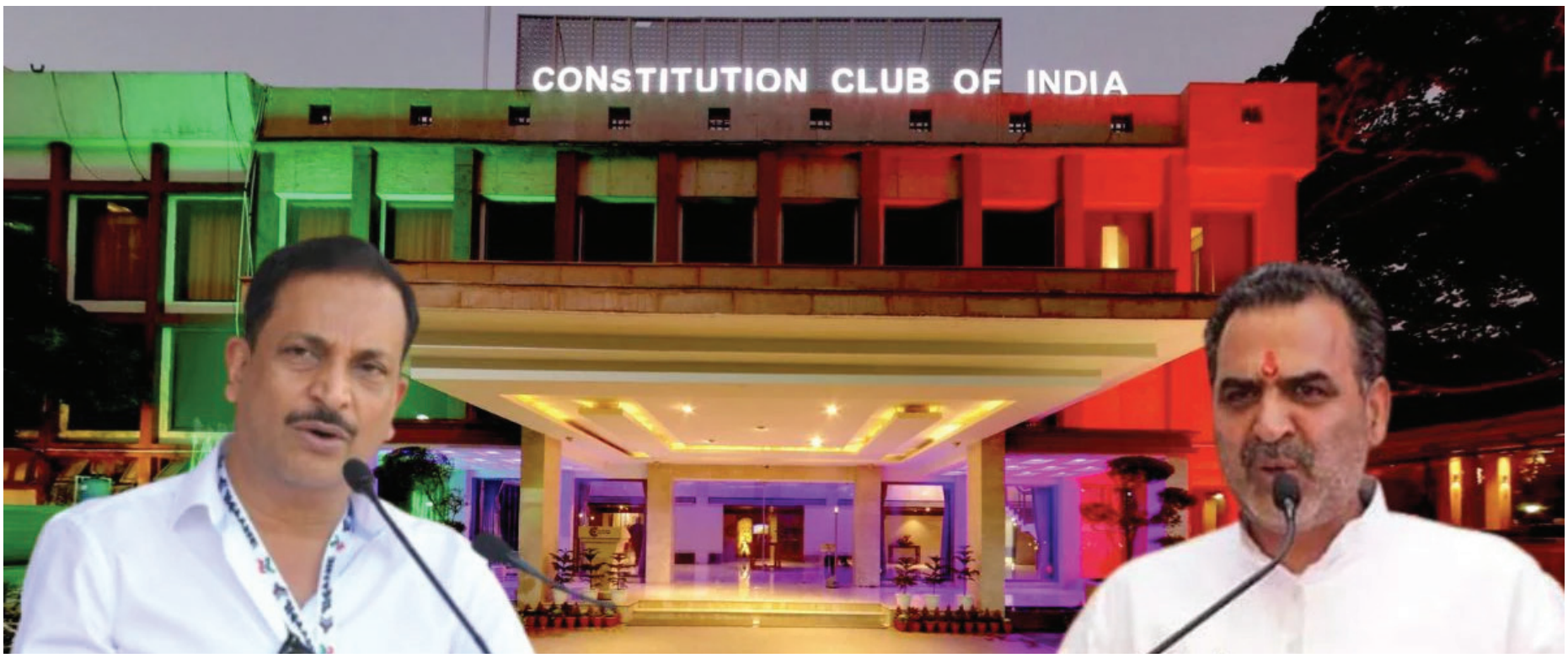

@ सुमित शुक्ला

खबर है कि दिल्ली में मौजूद कॉन्स्टिट्यूशन क्लब ऑफ इंडिया के सचिव पद के लिए चुनाव हुए। 13 अगस्त की देर रात नतीजे आए। भाजपा नेता और बिहार के सारण से सांसद राजीव प्रताप रूडी ने चुनाव में जीत दर्ज कर ली। उन्होंने अपनी ही पार्टी के नेता और पूर्व सांसद संजीव बालियान को हरा दिया। गौर कीजिएगा अपनी ही पार्टी के नेता यानी बीजेपी के ही। यह जो कॉन्स्टिट्यूशन क्लब है वो देश के सांसदों और पूर्व सांसदों के लिए बनाया गया है। हर 5 साल में यहां पर चुनाव होते हैं। इस बार चुनाव में 700 से ज्यादा सदस्यों ने वोटिंग की और नतीजा क्या हुआ। कुल वैध मतों की गिनती हुई तो पता चला कि राजीव प्रताप रूडी को 392 वोट मिले और ऐसे 102 वोटों के मार्जिन से रूडी ने यह चुनाव जीत लिया।

जीत दर्ज करने के फौरन बाद राजीव प्रताप रूडी ने कहा "मुझे लगता है अनुमानित तौर पर औपचारिक रूप से प्रकाशन 100 से अधिक मतों से मैं जीता हूं और अगर 000 से मल्टीप्लाई कर दे उसको पूरे मतदाता को हजार को तो 1 लाख अगर मान ले तो लगभग अच्छे वोटों से मैं जीता हूं और ये मेरे पैनल की जीत है और मैं आभार व्यक्त करना पड़े चाहूंगा कि सभी पार्टियों के नेताओं ने इसमें भागीदारी ली। जिसमें पार्टी का कहीं कोई स्वरूप उभर के नहीं आया। सबसे बड़ी उपलब्धि यह रही है कि मुझे लगता है कि मेरे सांसद मित्रों ने और मेरी टीम को और मुझे पिछले दो दशक के प्रयासों पर और जो कामयाबी है उस पर फिर से एक बार मोहर लगाया है। ये सबसे बड़ी बात है।"

जीत के बाद रूढ़ी समर्थकों ने क्लब के बाहर जश्न मनाया। ये चुनाव इतना जरूरी क्यों है। इसको जानना भी जरूरी है। बात ऐसी है कि रूडी बीते 25 सालों से कॉन्स्टिट्यूशन क्लब के सचिव हैं। उन्होंने पहली बार 1999 में सचिव पद का चुनाव जीता था और उसके बाद से लेकर अब तक उन्होंने यह चुनाव निर्विरोध ही जीता है। लेकिन इस बार चुनाव हुए तो अंदाजा था कि मामला इस बार भी निर्विरोध ही रहेगा। लेकिन ऐसा हुआ नहीं। अंदाजा गलत निकला। इस बार संजीव बालियान ने भी उम्मीदवारी ठोक दी उन्हीं के पार्टी के नेता की। यानी बीजेपी बनाम बीजेपी के समीकरण बन गए। टिप्पणीकारों ने समीकरण बनाए। संजीव बालियान एक मजबूत खेमे के उम्मीदवार हैं। उनके पीछे भाजपा के कुछ कद्दावर नेता भी खड़े थे। इस वजह से चुनाव निर्विरोध नहीं रहा।

चुनाव की तारीखें नजदीक आई। वोटों की लामबंदी भी शुरू हो गई। भाजपा कवर करने वाले पत्रकार बताते हैं कि उनकी पार्टी का बहुमत संजीव बालियान के साथ था। झारखंड के गोडा से सांसद निशिकांत दुबे ने भी चुनाव में संजीव बालियान की जीत की असफल भविष्यवाणी भी कर दी थी। यह भविष्यवाणी कम संजीव बालियान के समर्थन का स्वर ज्यादा था। इस कॉन्स्टिट्यूशनल क्लब में जो है एमपी ही यहां के जो सीटिंग एमपी है केवल 300 350 ही सीटिंग एमपी है जो मेंबर हैं। रेस्ट जो है वो एक्स एमपी है। इसका मतलब कि क्लब की गरिमा जो है वो कहीं ना कहीं डिटोरिएट हो रही थी। उसको बचाने के लिए लोगों ने वोट दिया है। दो-ती घंटे का सवाल है और मुझे लगता है कि परिवर्तन होगा। डॉक्टर संजीव बालियान जो है नए सचिव होंगे इस क्लब के और इसके बाद इस क्लब की व्यवस्था को दुरुस्त किया जाएगा।

अब इस घनघोर दो फाड़ में रूडी कैसे जीतते। सवाल तो यह है। जानकार बताते हैं कि रूडी ने विपक्ष के सांसदों को अपने पक्ष में लामबंद करना शुरू कर दिया। कांग्रेस, टीएमसी, सपा यानी समाजवादी पार्टी और अन्य विपक्षी पार्टियों का उन्हें साथ मिल गया। यह साथ ऐसा कि चुनाव जीतने के बाद रूडी ने खुद अपनी मीडिया बाइट में इस बात की तस्दीक की। आपने सुना ही है अभी और ध्यान ना हो तो फिर से सुनवा देते हैं। सभी पार्टियों के नेताओं ने इसमें भागीदारी ली। इसमें पार्टी का कहीं कोई स्वरूप उभर के नहीं आया। और मैं समझता हूं कि जिस प्रकार से चुनाव के परिणाम तो यह एक ऐसे दल दलगत दल की राजनीति से हटकर के सभी दलों के और मेरे पैनल में तो कांग्रेस के भी लोग थे, समाजवादी पार्टी के भी सदस्य थे, टीएमसी के भी सदस्य थे, निर्दलीय भी थे। तो मैं समझता हूं भाजपा के भी थे, कांग्रेस के भी थे, टीडीपी के भी थे। तो मोटे तौर से सभी राजनीतिक पार्टियों का एक समूह था, एक मित्रों का और ऐसे वोटों में बंटवारे में चीजें चली गई रूडी के पक्ष में।

राजीव प्रताप रूडी के लिए समाजवादी पार्टी की तरफ से जो है वो ये लामबंदी की गई कि राजीव प्रताप रूडी के पक्ष में वोट पड़े। टीएमसी के अंदर यह लामबंद किया गया। डीएमके के अंदर किया गया कांग्रेस के अंदर कि संजीव वालियन को वोट ना पड़े और एक तरीके से उसमें एक बड़े मैनेजमेंट के तौर पर अगर देखें तो नासिर हुसैन जो राज्यसभा में चीफ विप है उन्होंने ये पूरी मैनेजमेंट की। 38 पोस्टल बैलेट थे। जिनमें से 37 राजीव प्रताप रूडी के पक्ष में गए और एक पोस्टल बैलेट जो है वो संजीव बालियन के पक्ष में गया।

लेकिन एक इंटरेस्टिंग चीज जो हुई इसके अंदर जो अभी तक हमको खबर मिल पाई है उसमें यह है कि एक ऐसा पोस्टल बैलेट था सोमित्रो खान जो पश्चिम बंगाल से भारतीय जनता पार्टी के सांसद हैं उनका पोस्टल बैलेट उनके इच्छा के बिना जो है वो लिया गया और वोट कर दिया गया पोस्टल बैलेट के थ्रू। उन्होंने इसकी शिकायत जो है रिटर्निंग ऑफिसर को की और कुछ संजीव बालिया ने लिखित में ये शिकायत लोकसभा स्पीकर को की है।

दो और चीजें देखने को मिली। विजेंद्र सिंह जो पूर्व में भारतीय जनता पार्टी के सांसद हैं। वर्तमान में कांग्रेस में है। उनके फादर जो है चौधरी वीरेंद्र सिंह हैं। उनका वोट किसी और ने डाल दिया। उन्होंने इसकी शिकायत वहां पे दर्ज की लेकिन उनकी सुनवाई नहीं हुई। भारत बीएसपी के एक वोटर है राजाराम पूर्व में सांसद रहे हैं। उनका वोट भी किसी ने आके पहले डाल दिया। उन्होंने भी शिकायत की कि जी मेरा वोट पहले कैसे डाल दिया। लेकिन सुनवाई जो नहीं हो पाई और यह कहा गया रिटर्निंग ऑफिसर की तरफ वहां कि आपका वोट पड़ चुका है। अब इसमें हम कुछ नहीं कर सकते। तो तीन ऐसे वोटों को लेकर संशय है और इस पूरे उलटफेर के बीच चुनाव हुए और नतीजा क्या था वो हमने आपको बता ही दिया।

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम
भारत श्री

79वें स्वतंत्रता दिवस पर पीएम मोदी का बड़ा ऐलान

प्रधानमंत्री विकसित भारत रोजगार योजना से 3.5 करोड़ युवाओं को मिलेगा रोजगार

@ अंकित कुमार

79वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लाल किले की प्राचीर से देश को संबोधित करते हुए युवाओं को एक बड़ी सौगात दी। उन्होंने 'प्रधानमंत्री विकसित भारत रोजगार योजना' की शुरुआत का ऐलान किया पीएम ने कहा,"मेरे देश के युवाओं के लिए हम 1 लाख करोड़ की योजना शुरू कर रहे हैं। आज से 'प्रधानमंत्री विकसित भारत रोजगार योजना' लागू हो रही है। जो भी युवा प्राइवेट सेक्टर में पहली बार नौकरी पाएंगे, उन्हें सरकार की ओर से 15,000 दिए जाएंगे। और जो कंपनियां नई नौकरियां बनाएंगी, उन्हें भी प्रोत्साहन राशि मिलेगी।" क्या है प्रधानमंत्री विकसित भारत रोजगार योजना?यह योजना उन युवाओं और कंपनियों दोनों के लिए है जो पहली बार रोजगार की यात्रा शुरू कर रहे हैं।

पहली बार नौकरी करने वाले युवाओं को सरकार की ओर से 15,000 की सीधी आर्थिक मदद दी जाएगी।नई नौकरियां सृजित करने वाली कंपनियों को भी इंसेंटिव मिलेगा।

सरकार का दावा है कि इस योजना से 3.5 करोड़ से ज्यादा नौजवानों को रोजगार मिलेगा और प्राइवेट सेक्टर में नए अवसर तेजी से पैदा होंगे।

1 लाख करोड़ का बजट, 2 साल का लक्ष्य

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में 1 जुलाई 2025 को केंद्रीय मंत्रिमंडल ने इस योजना को मंजूरी दी थी। जिसका कुल बजट – 99,446 करोड़ है। और लक्ष्य अगले 2 सालों में 3.5 करोड़ रोजगार सृजन करने का है।

इनमें से 1.92 करोड़ युवाओं को पहली बार नौकरी मिलेगी।

यह योजना युवाओं को न सिर्फ पहला रोजगार दिलाने में मदद करेगी, बल्कि कंपनियों को भी नई नौकरियां सृजित करने के लिए प्रोत्साहित करेगी।

किसे मिलेगा 15,000?

योजना के तहत केवल वे युवा लाभार्थी होंगे जो पहली बार नौकरी शुरू कर रहे हों। और ईपीएफओ (EPFO) में पंजीकृत हों।सैलरी 1 लाख तक हो।

राशि दो किश्तों में मिलेगी

पहली किस्त मिलेगी नौकरी के 6 महीने पूरे करने के बाद और दूसरी किस्त 12 महीने नौकरी पूरी करने पर, साथ ही फाइनेंशियल लिटरेसी प्रोग्राम पूरा करना होगा।

कंपनियों को मिलेगा प्रोत्साहन

सरकार केवल युवाओं को ही नहीं, बल्कि कंपनियों को भी प्रोत्साहन देगी।प्रति कर्मचारी 3000 प्रति महीना मिलेगा।अवधि 2 साल तक होगा। और शर्त होगी कि कर्मचारी ने कंपनी में कम से कम 6 महीने नौकरी की हो।

विशेष रूप से मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर को प्राथमिकता दी जाएगी। इस सेक्टर में यह इंसेंटिव तीसरे और चौथे साल तक भी जारी रह सकता है।

आवेदन की प्रक्रिया है आसान

योजना का लाभ उठाने के लिए युवाओं और कंपनियों दोनों को कुछ औपचारिकताएँ पूरी करनी होंगी।

कर्मचारी के पास ईपीएफओ यूएएन नंबर और आधार से जुड़ा बैंक अकाउंट होना जरूरी है।

जिस कंपनी में कर्मचारी जुड़ता है, वही उसका विवरण सरकार को भेजेगी।

कंपनी ईपीएफओ के इलेक्ट्रॉनिक चालान कम रिटर्न (ECR) फॉर्म में सैलरी और जॉइनिंग डिटेल भरती है। सरकार डेटा की वेरिफिकेशन के बाद राशि सीधे कर्मचारी के बैंक खाते में ट्रांसफर करती है।

योजना से युवाओं में उत्साह

सरकार का मानना है कि यह योजना न सिर्फ बेरोजगारी कम करेगी बल्कि युवाओं में आत्मनिर्भरता और आत्मविश्वास भी बढ़ाएगी। पहली बार नौकरी पाने वाले युवाओं को सीधा वित्तीय लाभ मिलेगा, जिससे वे अपने करियर की शुरुआत मजबूत आधार पर कर सकेंगे।

पीएम ने अन्य योजनाओं का भी किया उल्लेख

अपने भाषण में प्रधानमंत्री मोदी ने जीएसटी रिफॉर्म और पीएम स्वनिधि योजना का भी ज़िक्र किया।

जीएसटी सुधार से कर प्रणाली को सरल और पारदर्शी बनाने की दिशा में कदम उठाए गए।

पीएम स्वनिधि योजना ने रेहड़ी-पटरी और छोटे कारोबारियों को बिना झंझट लोन उपलब्ध कराया।

प्रधानमंत्री ने कहा कि इन योजनाओं ने बदलाव की धारा को समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचाया है।

3.5 करोड़ रोजगार का हो सकता है सृजन

विशेषज्ञों का मानना है कि इस योजना का सबसे बड़ा असर प्राइवेट सेक्टर में दिखाई देगा।

पहली बार नौकरी करने वाले युवाओं को अतिरिक्त आर्थिक मदद मिलेगी।

मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर में रोज़गार की रफ्तार बढ़ेगी।

यह योजना रोजगार सृजन और आर्थिक विकास की दिशा में बड़ा कदम साबित हो सकती है।

79वें स्वतंत्रता दिवस पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का यह ऐलान देश के करोड़ों युवाओं के लिए बड़ी खुशखबरी है।

'प्रधानमंत्री विकसित भारत रोजगार योजना' केवल नौकरी दिलाने की योजना नहीं, बल्कि युवाओं को आत्मनिर्भर बनाने की पहल है। अगले दो वर्षों में 3.5 करोड़ रोजगार का लक्ष्य इस बात का संकेत है कि भारत आने वाले समय में न सिर्फ सबसे युवा देश रहेगा, बल्कि रोजगार सृजन में भी मजबूत कदम बढ़ाएगा।

योगी जी के 38 दौरों ने वृन्दावन को चमका दिया, लेकिन यमुना अभी भी गंदी क्यों?

वृन्दावन वो जगह है जहाँ कृष्ण जी खेलते थे। पिछले आठ सालों में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी वहाँ 38 बार गए हैं। हर बार कुछ नया करते हैं। जनमाष्टमी पर भी गए और बड़े-बड़े प्रोजेक्ट शुरू किए। लेकिन यमुना नदी अभी भी साफ नहीं हुई। लोग कहते हैं कि विकास तो हो रहा है, लेकिन नदी की हालत देखकर दुख होता है। आइए देखते हैं कि वृन्दावन कितना बदला, आगे क्या होगा, यमुना क्यों गंदी है और लोग कितने खुश हैं।

योगी जी के दौरों से वृन्दावन में क्या बदला?

योगी जी 2017 में मुख्यमंत्री बने। तब से वृन्दावन और मथुरा में बहुत बदलाव आए। वो कहते हैं कि पिछले 8-9 सालों में जनमाष्टमी और रंगोत्सव में हर बार जाते हैं। इस साल जनमाष्टमी पर, जो 16 अगस्त 2025 को थी, उन्होंने 118 प्रोजेक्ट शुरू किए। इनकी कीमत 646 करोड़ रुपये है। ये प्रोजेक्ट मथुरा-वृन्दावन के लिए हैं। जैसे सड़कें, पार्किंग, दुकानें और मंदिरों के आसपास सुविधाएँ। वृन्दावन पहले सिर्फ गलियाँ और छोटे घर थे। अब वहाँ हाई-राइज़ बिल्डिंग आ गईं। दुकानें बढ़ीं, लेकिन गलियाँ और संकरी हो गईं। पर्यटक बढ़े, तो समस्या भी। लेकिन सरकार ने बदलाव किए। बांके बिहारी मंदिर कॉरिडोर बन रहा है। ये 500 करोड़ का प्रोजेक्ट है। मई 2025 में सुप्रीम कोर्ट ने मंज़ूरी दी। इससे दर्शन आसान होगा, पार्किंग बनेगी, दुकानें आएँगी। तीन तरफ से रास्ते बनेंगे।

ब्रज इलाके में 30000 करोड़ का प्लान है। मथुरा, वृन्दावन, गोकुल, बरसाना सब शामिल। पुराने कुंड साफ होंगे, परिक्रमा रोड अच्छा बनेगा। पर्यटकों के लिए सुविधाएँ बढ़ेंगी। जनमाष्टमी 2025 पर 60 लाख लोग आए। पिछले साल से ज़्यादा। ये रिकॉर्ड है। योगी जी कहते हैं कि उत्तर प्रदेश में 65 करोड़ पर्यटक आए पिछले साल। अयोध्या, काशी जैसे वृन्दावन भी चमकेगा।

विकास के साथ संस्कृति बचाना। योगी जी कहते हैं कि आधुनिकता और पुरानी चीज़ें साथ चलेंगी। विंध्याचल धाम में कॉरिडोर बना, वैसा यहाँ भी। कानपुर और मथुरा-वृन्दावन में एक साथ सरकारी दफ्तर बनेंगे। विज़न 2030 के तहत। 195 प्रोजेक्ट 30080 करोड़ के मथुरा-वृन्दावन के लिए। कानून-व्यवस्था अच्छी हुई। लोग कहते हैं कि पहले डर था, अब सुरक्षित है। योगी जी का नाम सुनकर लोग खुश होते हैं।

ये बदलाव सिर्फ इमारतें नहीं। पर्यटन बढ़ा। लोग ज़्यादा आते हैं। अर्थव्यवस्था मज़बूत हुई। लेकिन कुछ लोग कहते हैं कि विकास के नाम पर पुरानी चीज़ें टूट रही हैं। दुकानें हट रही हैं। लेकिन सरकार कहती है कि सबके लिए अच्छा है। रिहैबिलिटेशन प्लान है। रुक्मिणी विहार और सुनरख बंगर में ज़मीन दी जाएगी। 275 परिवारों के लिए। विकास तेज़ हुआ। अयोध्या और प्रयागराज जैसे अब मथुरा की बारी। योगी जी 38 बार आए, हर बार कुछ नया। पहले वृन्दावन छोटा था, अब बड़ा शहर बन रहा है। सड़कें चौड़ी, लाइटें, सफाई। लेकिन यमुना अभी गंदी। ये कमी है। कुल मिलाकर, योगी जी के दौरों से वृन्दावन चमक उठा। लोग कहते हैं कि कृष्ण नगरी अब नई रौनक पा रही है।

भविष्य में वृन्दावन कैसा बनेगा?

भविष्य में वृन्दावन और चमकेगा। सरकार का प्लान बड़ा है। 30000 करोड़ से ब्रज इलाका बदलेगा। मथुरा, वृन्दावन, बरसाना, गोकुल जुड़ेंगे। पुराने समय जैसा महसूस होगा। द्वापर युग की याद आएगी। परिक्रमा मार्ग सुंदर बनेगा। प्राचीन कुंड ठीक होंगे। भक्तों के लिए अच्छी सुविधाएँ।

बांके बिहारी कॉरिडोर मई 2025 में मंज़ूर हुआ। 5 एकड़ ज़मीन ली जाएगी। मंदिर के पैसे से। तीन तरफ रास्ते, पार्किंग, दुकानें। लोग आसानी से दर्शन करेंगे। भीड़ कम होगी। वृन्दावन में विरोध हुआ, लेकिन सरकार कहती है कि ज़रूरी है। ट्रस्ट बिल 2025 से मंदिर का मैनेजमेंट अच्छा होगा। पैसों की पारदर्शिता आएगी। परंपराएँ बचेंगी।

हाईवे और बाईपास बनेंगे। कनेक्टिविटी अच्छी होगी। एक्सप्रेसवे से पर्यटक आसानी से आएँगे। 2025 अपडेट में कहा गया कि ट्रैफिक कम होगा, तीर्थयात्रा आसान। मास्टर प्लान पुराने हैं, लेकिन अब नए। गोविंद विहार आवासीय योजना 2024 का लॉटरी ड्रॉ फरवरी 2025 में हुआ। नए घर बनेंगे।

विज़न 2030 में मथुरा-कानपुर मॉडल सिटी। संस्कृति और इंडस्ट्री साथ। 37000 करोड़ कानपुर के लिए, 30080 करोड़ मथुरा-वृन्दावन के। धार्मिक पर्यटन बढ़ेगा। लाखों लोग आएँगे। अर्थव्यवस्था मज़बूत। लेकिन यमुना साफ करनी होगी। नहीं तो पर्यटक नाखुश रहेंगे। सरकार कहती है कि दिल्ली से गंदा पानी आता है। यूपी प्रयास कर रहा है। एनजीटी ने आदेश दिए, लेकिन पूरी तरह अमल नहीं।

कुल मिलाकर, वृन्दावन विश्व स्तर का बनेगा। अयोध्या-काशी जैसा। आधुनिक सुविधाएँ, पुरानी संस्कृति। पर्यटक बढ़ेंगे, नौकरियाँ मिलेंगी। लेकिन पर्यावरण का ध्यान रखना। यमुना साफ हो, तो परफेक्ट। योगी जी का प्लान अच्छा लगता है। लोग उम्मीद कर रहे हैं। ये प्लान सिर्फ इमारतें नहीं। संस्कृति बचाना। कृष्ण की लीला वाली जगहें चमकेंगी। गोवर्धन, राधा कुंड साफ होंगे। भक्त खुश होंगे। लेकिन विरोध भी है। कुछ लोग कहते हैं कि सरकार मंदिरों पर कब्ज़ा कर रही है। ट्रस्ट बिल पर बहस। लेकिन ज़्यादातर लोग विकास चाहते हैं। आने वाले सालों में वृन्दावन नया रूप लेगा। पर्यटन का हब बनेगा।

यमुना की सफाई में सरकार क्यों फेल?

यमुना नदी कृष्ण जी की लीला वाली है। लेकिन अब गंदी है। वृन्दावन-मथुरा में प्रदूषण बहुत। सरकार ने वादा किया था कि 2022 तक साफ हो जाएगी। पीने लायक बनेगी। लेकिन नहीं हुई। क्यों? कई वजहें।

सबसे बड़ी, अनट्रीटेड सीवेज। शहरों से गंदा पानी सीधा नदी में। मथुरा में साढ़ी डाइंग यूनिट से ज़हरीला पानी। इंडस्ट्री से प्रदूषण। दिल्ली से बहुत गंदगी आती है। योगी जी कहते हैं कि दिल्ली सरकार जिम्मेदार। अगर वो रोकती, तो यमुना गंगा जैसी साफ होती। लेकिन दिल्ली में अनट्रीटेड वाटर ट्रीटमेंट प्लांट से कमज़ोर।

एनजीटी ने आदेश दिए। यूपी चीफ सेक्रेटरी को कहा कि सफाई करो। लेकिन अमल कम। वृन्दावन में ड्रेन से गंदा पानी जाता है। एनजीटी ने कहा कि सिर्फ ट्रीटेड पानी डालो। लेकिन नहीं हुआ। 2021 में कोविड से ज़्यादा हानिकारक कहा गया। संतों ने विरोध किया। नेताओं को नदी में घुसने नहीं दिया। कहते हैं कि पानी पीने लायक नहीं, नहाने लायक भी नहीं।

नमामी गंगे प्रोजेक्ट है। करोड़ों खर्च। लेकिन प्रदूषण बढ़ा। एनक्रोचमेंट। नदी की चौड़ाई कम। सेल्फ-क्लीनिंग नहीं होती। अवैध माइनिंग। यूपी-दिल्ली बॉर्डर पर रेत चोरी। बाढ़ का खतरा बढ़ा। 2025 में दिल्ली सीएम ने योगी जी को चिट्ठी लिखी। लेकिन समस्या बनी।

वृन्दावन में संत कहते हैं कि सरकार सुनती नहीं। लाखों खर्च, लेकिन प्रदूषण वैसा। 2020 में लॉकडाउन से थोड़ा साफ हुआ, क्योंकि फैक्टरियाँ बंद। लेकिन अब फिर गंदा। कारणः तालमेल की कमी। दिल्ली-यूपी साथ नहीं। इंडस्ट्री रेगुलेशन कम। एनक्रोचमेंट नहीं रुकता। सरकार कहती है प्रयास कर रही। लेकिन रिजल्ट नहीं। लोग दुखी। कृष्ण की नगरी में यमुना रो रही है।

कुल मिलाकर, सरकार फेल क्योंकि प्लान अच्छे, अमल कम। ऊपर से गंदगी आती है। लोकल लेवल पर सफाई नहीं। इंडस्ट्री कंट्रोल नहीं। एनजीटी के आदेश पालन नहीं। वादे बहुत, काम कम। यमुना साफ हो, तो वृन्दावन परफेक्ट। लेकिन अभी कमी है।

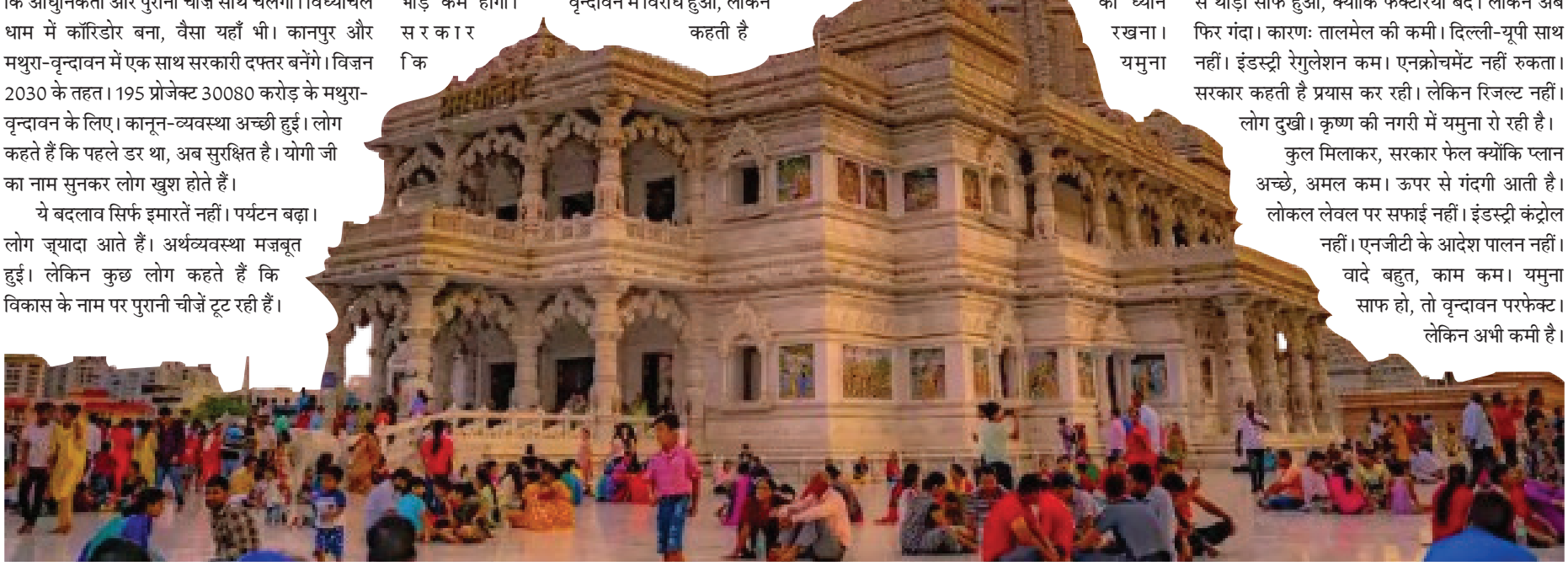

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम
भारत श्री

माँ के लिए संभव नहीं होगी मुझसे कविता

अमर चिऊँटियों का एक दस्ता
मेरे मस्तिष्क में रेंगता रहता है
माँ वहाँ हर रोज़ चुटकी दो चुटकी आटा डाल देती है

मैं जब भी सोचना शुरू करता हूँ
यह किस तरह होता होगा
घट्टी पीसने की आवाज़
मुझे घेरने लगती है
और मैं बैठे-बैठे दूसरी दुनिया में ऊँघने लगता हूँ

जब कोई भी माँ छिलके उतारकर
चने, मूँगफली या मटर के दाने
नन्ही हथेलियों पर रख देती है
तब मेरे हाथ अपनी जगह पर
थरथराने लगते हैं
माँ ने हर चीज़ के छिलके उतारे मेरे लिए
देह, आत्मा, आग और पानी तक के छिलके उतारे
और मुझे कभी भूखा नहीं सोने दिया

मैंने धरती पर कविता लिखी है
चंद्रमा को गिटार में बदला है
समुद्र को शेर की तरह आकाश के पिंजरे में खड़ा कर दिया
सूरज पर कभी भी कविता लिख दूँगा
माँ पर नहीं लिख सकता कविता।

चन्द्रकान्त देवताले

पहला आंदोलन—
शायद बीज ने किया होगा
मिट्टी के विरुद्ध
और फूट पड़ा होगा
पौधा बनकर।

या फिर शिशु ने
कोख के भीतर किया होगा
जन्म लेने के लिए।

हर बार—
आंदोलनकारी को प्रेम मिला है,
मिट्टी से भी,
और माँ से भी।

क्योंकि—
माँएँ जानती हैं कि
आंदोलन के बग़ैर
सृजन संभव नहीं।

अशोक कुमार

संतों के चरणों में ही असली भक्ति

गायक मुक्तिदान गढ़वी से खास बातचीत

ग्रेटर नोएडा की पहचान आमतौर पर एक औद्योगिक शहर के रूप में होती है। बड़ी-बड़ी आईटी कंपनियों और फैक्ट्रियों के बीच शायद ही कोई सोचे कि यहां आध्यात्म और भक्ति का कोई विशाल आयोजन हो सकता है। लेकिन हाल ही में यहां 'प्रभु कृपा दुख निवारण समागम' का आयोजन हुआ, जिसने इस औद्योगिक शहर को भक्ति की गंगा में डुबो दिया। इसी समागम में मौजूद थे गुजरात से आए प्रसिद्ध भक्ति गायक मुक्तिदान गढ़वी, जो अपनी अद्भुत आवाज और शिव-भक्ति गीतों के लिए पहचाने जाते हैं। महादेव के नाम पर झूमते हुए उनके स्वर श्रोताओं को आत्मविभोर कर देते हैं। इस अवसर पर हमने उनसे लंबी और गहन बातचीत की। प्रस्तुत हैं उस विशेष साक्षात्कार के अंश—

मुक्तिदान जी, आपका स्वागत है। सबसे पहले आपसे जानना चाहेंगे कि इस समागम में आप किस सिलसिले से पधारे हैं और आपकी पहली अनुभूति कैसी रही?

मुक्तिदान गढ़वी — बहुत-बहुत धन्यवाद आपका। यह मेरा सौभाग्य है कि मैं यहां आया। 'प्रभु कृपा दुख निवारण समागम' अपने आप में ही बहुत बड़ा आयोजन है। प्रभु कृपा से ही हर किसी का दुख निवारण होता है। मेरा भी यही अनुभव रहा। जब मैंने पहली बार इस भूमि पर कदम रखा तो 'पहला इंप्रेशन ही लास्ट इंप्रेशन' साबित हुआ। दिल्ली-नोएडा और ग्रेटर नोएडा की जनता ने इतना प्रेम दिया कि मैं शब्दों में नहीं कह सकता। कल तो तेज बारिश हो रही थी, पंडाल तक पहुंचना मुश्किल था, लेकिन लोग डटे रहे। भीगते हुए महादेव की वंदना सुनते रहे। मेरे गीतों पर झूमते रहे। यह अनुभव मेरे लिए अविस्मरणीय रहा।

समागम के अंत में हमने देखा कि आप बड़ी आस्था से जगद्गुरु ब्रह्मर्षि कुमार स्वामी जी के चरणों में झुक गए। आपकी आंखों में भक्ति का अलग तेज था। यह भाव आपके भीतर कैसे आया?

मुक्तिदान गढ़वी — देखिए, मैं तो हमेशा से ही मानता हूं कि संतों के चरणों में झुकना ही सबसे बड़ा सौभाग्य है। चाहे कोई भी भगवाधारी संत हों, जो सनातन धर्म का प्रचार करते हैं, गौ माता की जय बोलते हैं, धरती माता का सम्मान करते हैं — उनके आगे मेरा सिर अपने आप झुक जाता है। यह कोई दिखावा नहीं था। यह भीतर से उपजा भाव था। गुरुदेव को देखकर मेरे दुख निवारण का अनुभव हुआ। संतों के सामने तो हम सब दास हैं। मैं स्वभाव से ही ऐसा हूं कि किसी बुजुर्ग, बड़े भाई या संत के आगे झुक जाता हूं। यह आदर भाव मेरे भीतर बचपन से है।

आप भगवान शिव की स्तुति विशेष रूप से गाते हैं। सोशल मीडिया पर भी आपके शिव-भक्ति गीत खूब वायरल होते हैं। आपको इस भक्ति-संगीत की प्रेरणा कहां से मिली?

मुक्तिदान गढ़वी — मुझे प्रेरणा बचपन से ही महादेव से मिली। महादेव का नाम लेते ही भीतर ऊर्जा का प्रवाह महसूस होता है। मैं हमेशा कहता हूं — "ये आत्मा का रंजन है, मनोरंजन नहीं।" भजन गाना महज लोगों को खुश करने के लिए नहीं है, बल्कि आत्मा को तृप्त करने के लिए है। जब मैं शिव का नाम गाता हूं तो मेरा आत्मरंजन होता है। हनुमान जी, राम, कृष्ण — सभी देवी-देवताओं का नाम लेने से भी वही ऊर्जा मिलती है। वैज्ञानिक भी मानते हैं कि मंत्रोच्चारण और नाम-स्मरण से शरीर और मन में अद्भुत ऊर्जा का संचार होता है। यही वजह है कि मैं महादेव की स्तुति करते हुए संगीत में पूरी तरह डूब जाता हूं।

आपका हाल ही में गाया हुआ गाना "ये शंभू" सोशल मीडिया पर खूब चला। थोड़ा उसके बारे में बताइए।

मुक्तिदान गढ़वी — जी हां, वह गाना मुझे भी बेहद प्रिय है। इसकी पंक्तियां हैं —

"भव गण भूत भयंकर भूतनाथ अघनकर्ते,
बाधा भंकर गाजत डंगर,
पा गर्ते डमरू द डंकर शंभू।"

यह गीत कवि पद्मश्री दूल्हा भैया काग का लिखा हुआ है। उन्होंने इसे अलग राग में गाया था, लेकिन मैंने इसे थोड़े वेस्टर्न टच के साथ प्रस्तुत किया। यह गाना सुनते ही लोग महादेव में लीन हो जाते हैं।

क्या आप खुद भी गीत लिखते और कंपोज करते हैं?

मुक्तिदान गढ़वी — हाँ, लिखता हूँ। कभी-कभी खुद भजन रचता हूँ, लेकिन ज़्यादा रुचि मेरी भाषण और साहित्य में रही है। भजन लिखने और गाने दोनों का उद्देश्य एक ही है — महादेव की स्तुति और आत्मा का रंजन।

आपकी पढ़ाई-लिखाई का क्या सफ़र रहा?

मुक्तिदान गढ़वी — साफ-साफ कहूं तो मेरी औपचारिक पढ़ाई बहुत कम है। मैं आठवीं तक पढ़ा हूँ, नौवीं में फेल हो गया। लेकिन यही से मेरा दूसरा सफ़र शुरू हुआ। किसी गुरु से सीखने नहीं गया, कोई औपचारिक संगीत शिक्षा नहीं ली। यह सब कुछ कुदरत से मिला वरदान है।

आपको कब लगा कि अब लोग आपको पहचानने लगे हैं और मंच पर बुलाया जाने लगा है?

मुक्तिदान गढ़वी — मुझे यह एहसास 19 साल की उम्र में हुआ। तब मेरा पहला कार्यक्रम 'ईटी गुजराती' चैनल पर आया था। मैंने महाराणा प्रताप पर भाषण दिया। लोग बहुत प्रभावित हुए। उस दिन से लेकर आज तक मेरा सफर लगातार चल रहा है।

आपने महाराणा प्रताप का ज़िक्र किया। आपको इतिहास के कौन से नायक सबसे प्रिय हैं?

मुक्तिदान गढ़वी — मुझे सबसे प्रिय बप्पा रावल हैं। उन्होंने वैदिक सनातन हिंदू धर्म और क्षत्रिय गौरव की रक्षा के लिए असाधारण संघर्ष किया। मुगलों के खिलाफ भी लड़े। मैं किसी की भावनाओं को ठेस नहीं पहुँचाना चाहता, पर इतिहास गवाह है कि बप्पा रावल ने धर्म और संस्कृति की रक्षा में महान योगदान दिया। इसके अलावा मैं तमिलनाडु के भगवान अयप्पा को भी मानता हूँ।

आपने कहा कि आपका रुझान भाषण और साहित्य में भी है। इस पर कुछ बताएंगे?

मुक्तिदान गढ़वी — जी, बिल्कुल। मैं खुद को सिर्फ गायक नहीं मानता, बल्कि लोक-साहित्यकार भी समझता हूँ। जैसे चारणी साहित्यकार समाज सुधारक होते हैं, वैसे ही मैं भी भक्ति के साथ-साथ समाज को जागरूक करने के लिए भाषण करता हूँ।

अंत में, आज के युवा जो भक्ति से दूर हो रहे हैं, उन्हें आप क्या संदेश देना चाहेंगे?

मुक्तिदान गढ़वी — मैं यही कहूंगा कि भक्ति मनोरंजन नहीं है। यह आत्मा का रंजन है। अगर आप महादेव, हनुमान, राम, कृष्ण — किसी भी देवी-देवता का नाम स्मरण करेंगे तो आपके जीवन में सकारात्मक ऊर्जा आएगी।भक्ति आपको भी आनंद देगी और समाज को भी। जब तक हम नाम-स्मरण करेंगे, तब तक आत्मकल्याण संभव है।

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम
भारत श्री

यू.पी.आई. लेनदेन में उछाल और डिजिटल अर्थव्यवस्था का विकास

भारत में डिजिटल भुगतान की दुनिया तेजी से बदल रही है। अगस्त 2025 में यू पी आई के माध्यम से रोजाना औसतन 90,446 करोड़ रुपये के लेनदेन हुए हैं। यह आंकड़ा 18 अगस्त को जारी रिपोर्ट में सामने आया है। नोटबंदी के बाद से कैशलेस सिस्टम की तरफ लोगों का रुझान बढ़ा है। यह बदलाव आम लोगों की जिंदगी को आसान बना रहा है और कारोबार को नई रफ्तार दे रहा है। इस लेख में हम यू पी आई के इस उछाल, डिजिटल अर्थव्यवस्था के विकास, फायदों, चुनौतियों और भविष्य की बात करेंगे। हमारा मकसद है कि साधारण भाषा में ये जानकारी सब तक पहुंचे, ताकि आप समझ सकें कि यह कैसे आपकी रोजमर्रा की जिंदगी को छू रही है।

यू पी आई की रफ्तार: अगस्त का नया रिकॉर्ड

यू पी आई, यानी यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस, एक ऐसा सिस्टम है जो बैंकों को जोड़कर तुरंत पैसे ट्रांसफर करने की सुविधा देता है। 2016 में शुरू होने के बाद से यह भारत की डिजिटल पेमेंट की रीढ़ बन गया है। अगस्त 2025 में रोजाना औसतन 675 मिलियन लेनदेन हुए, जो जनवरी 2025 के 548 मिलियन से काफी ज्यादा है। मूल्य के हिसाब से जनवरी में रोजाना 75,743 करोड़ रुपये थे, जो अगस्त में बढ़कर 90,446 करोड़ रुपये हो गए। एन पी सी आई के आंकड़ों से पता चलता है कि जुलाई 2025 में कुल 19.47 बिलियन लेनदेन हुए, जिनकी वैल्यू 25.08 ट्रिलियन रुपये थी। यह संख्या जून 2025 के 18.39 बिलियन लेनदेन से ज्यादा है।

महाराष्ट्र जैसे राज्य यू पी आई का सबसे ज्यादा इस्तेमाल कर रहे हैं, जहां लोग रोजाना सबसे ज्यादा ट्रांजेक्शन कर रहे हैं। एस बी आई जैसी बैंकें इसमें आगे हैं, जिन्होंने 5.2 बिलियन ट्रांजेक्शन हैंडल किए। नोटबंदी के बाद से लोग कैश की बजाय डिजिटल तरीके अपनाने लगे। छोटे दुकानदार से लेकर बड़े कारोबार तक, सब यू पी आई पर निर्भर हो रहे हैं। लेकिन यह उछाल सिर्फ संख्या नहीं, बल्कि लोगों की आदतों में बदलाव दिखाता है। कभी लोग बैंक जाकर पैसे ट्रांसफर करते थे, अब फोन से सेकंडों में हो जाता है। यह विकास ग्रामीण इलाकों तक पहुंच रहा है, जहां पहले बैंकिंग सुविधा कम थी। हालांकि, शहरों में यह और तेजी से फैल रहा है। कुल मिलाकर, 2025 में यू पी आई ने रिकॉर्ड तोड़े हैं, जो डिजिटल इंडिया की सफलता की कहानी बयान करते हैं।

डिजिटल अर्थव्यवस्था का फैलाव: यू पी आई की बड़ी भूमिका

भारत की डिजिटल अर्थव्यवस्था 2025 में तेजी से बढ़ रही है। यू पी आई इसमें मुख्य खिलाड़ी है। यह सिस्टम वित्तीय समावेशन को बढ़ावा दे रहा है, यानी उन लोगों तक बैंकिंग पहुंचा रहा है जो पहले बाहर थे। ग्रामीण इलाकों में यू पी आई ने कैश पर निर्भरता कम की है। छोटे कारोबारियों को आसानी से पेमेंट मिल रहा है, जो अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाता है।

रिपोर्ट्स बताती हैं कि यू पी आई ने जी डी पी में योगदान दिया है। 2016 से अब तक, यह पारदर्शिता बढ़ा रहा है और क्रॉस-बॉर्डर ट्रांजेक्शन को आसान बना रहा है। ई-कॉमर्स में यू पी आई का इस्तेमाल बढ़ा है, जहां लोग ऑनलाइन शॉपिंग के लिए इसे चुनते हैं। फिनटेक कंपनियां यू पी आई पर आधारित ऐप्स बना रही हैं, जो नई नौकरियां पैदा कर रही हैं। सरकार की डिजिटल इंडिया पहल में यू पी आई केंद्रीय भूमिका निभा रहा है। 2025 में, डिजिटल पेमेंट वॉल्यूम तीन गुना बढ़ने की उम्मीद है।

यू पी आई ने टैक्स कलेक्शन को भी बेहतर बनाया, क्योंकि ट्रांजेक्शन ट्रैक हो रहे हैं। लेकिन यह सिर्फ फायदे नहीं, बल्कि अर्थव्यवस्था के बदलते चेहरे को दिखाता है। छोटे व्यापारी अब डिजिटल तरीके से बिजनेस कर रहे हैं, जो उन्हें ग्लोबल मार्केट से जोड़ता है। हालांकि, ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट की कमी एक बाधा है। कुल मिलाकर, यू पी आई डिजिटल अर्थव्यवस्था को नई ऊंचाई दे रहा है, जो भारत को विश्व स्तर पर मजबूत बना रहा है। यह बदलाव आम आदमी की जेब से शुरू होकर देश की अर्थव्यवस्था तक पहुंच रहा है। लोग अब सोचते हैं कि कैश क्यों रखें, जब फोन से सब हो सकता है। लेकिन इस विकास में संतुलन बनाना जरूरी है, ताकि कोई पीछे न छूटे।

फायदे जो जिंदगी बदल रहे हैं

यू पी आई ने आम लोगों की जिंदगी को आसान बनाया है। अब आपको लंबी लाइनों में खड़े होने की जरूरत नहीं। चाहे किराने की दुकान हो या ऑनलाइन शॉपिंग, यू पी आई से पेमेंट कुछ सेकंड में हो जाता है। छोटे दुकानदारों को भी फायदा हुआ है। पहले उन्हें कैश के लिए इंतजार करना पड़ता था, अब तुरंत पेमेंट मिलता है। ग्रामीण इलाकों में लोग, जो पहले बैंक से दूर थे, अब यू पी आई के जरिए लेनदेन कर रहे हैं।

यह सिस्टम सुरक्षित भी है। हर ट्रांजेक्शन में पिन डालना पड़ता है, जिससे धोखाधड़ी की संभावना कम होती है। 2025 में यू पी आई ने 200 से ज्यादा बैंकों को जोड़ा है, जिससे लोग किसी भी बैंक अकाउंट से पेमेंट कर सकते हैं। सरकार को भी फायदा हुआ है, क्योंकि डिजिटल पेमेंट से टैक्स चोरी कम हुई है। ऑनलाइन बिल पेमेंट, रीचार्ज और टिकट बुकिंग अब आसान हो गए हैं।

यू पी आई की सबसे बड़ी ताकत इसकी सादगी है। आपको सिर्फ एक मोबाइल नंबर या वी पी ए चाहिए। कोई जटिल प्रक्रिया नहीं। यह छोटे-छोटे लेनदेन को भी आसान बनाता है, जैसे चाय की दुकान पर 10 रुपये देना। साथ ही, यह 24 घंटे उपलब्ध है, यानी आप रात को भी पेमेंट कर सकते हैं। लेकिन फायदों के साथ कुछ सवाल भी हैं। क्या सभी लोग इसे इस्तेमाल कर पा रहे हैं? क्या डिजिटल साक्षरता की कमी इसे सीमित कर रही है? ये सवाल हमें आगे सोचने पर मजबूर करते हैं।

चुनौतियां: रास्ते में रुकावटें

यू पी आई की सफलता के बावजूद कुछ चुनौतियां हैं। सबसे बड़ी समस्या है इंटरनेट कनेक्टिविटी। ग्रामीण इलाकों में अब भी कई जगह नेटवर्क कमजोर है। बिना इंटरनेट, यू पी आई काम नहीं करता। दूसरी चुनौती है डिजिटल साक्षरता। बहुत से लोग, खासकर बुजुर्ग और कम पढ़े-लिखे, यू पी आई का इस्तेमाल नहीं समझ पाते। उन्हें डर रहता है कि गलती से पैसे गलत जगह चले जाएंगे। साइबर फ्रॉड भी एक बड़ी समस्या है। 2025 में फ्रॉड के मामले बढ़े हैं, जहां लोग फर्जी लिंक या फोन कॉल से ठगे जा रहे हैं। एन पी सी आई और बैंकों ने सुरक्षा बढ़ाई है, लेकिन लोगों को जागरूक करना जरूरी है। एक और मुद्दा है सर्वर की समस्या। कई बार ज्यादा ट्रांजेक्शन होने पर यू पी आई सिस्टम धीमा हो जाता है। इससे लोगों को परेशानी होती है।

गांवों में स्मार्टफोन की पहुंच भी सीमित है। हालांकि भारत में 800 मिलियन से ज्यादा स्मार्टफोन यूजर्स हैं, लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में यह संख्या कम है। साथ ही, बिजली की कमी भी एक रुकावट है। अगर फोन की बैटरी खत्म हो जाए, तो यू पी आई का इस्तेमाल असंभव हो जाता है। इन चुनौतियों का हल निकालना जरूरी है, ताकि यू पी आई का फायदा हर कोने तक पहुंचे।

भविष्य की राह: यू पी आई का अगला पड़ाव

यू पी आई का भविष्य उज्ज्वल है। विशेषज्ञों का मानना है कि 2030 तक भारत में डिजिटल पेमेंट और भी बढ़ेंगे। यू पी आई अब अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी फैल रहा है। सिंगापुर, यूएई और नेपाल जैसे देशों में यू पी आई का इस्तेमाल शुरू हो गया है। यह भारतीय पर्यटकों और कारोबारियों के लिए फायदेमंद है।

सरकार और एन पी सी आई नए फीचर्स जोड़ रहे हैं। जैसे, यू पी आई लाइट, जो कम डेटा में काम करता है। क्रेडिट ऑन यू पी आई भी शुरू हुआ है, जिससे लोग छोटे लोन तुरंत ले सकते हैं। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग से यू पी आई को और सुरक्षित बनाने की कोशिश हो रही है।

लेकिन भविष्य में सबसे बड़ा लक्ष्य है सभी को शामिल करना। ग्रामीण इलाकों में इंटरनेट और स्मार्टफोन की पहुंच बढ़ानी होगी। डिजिटल साक्षरता के लिए स्कूलों और समुदायों में कार्यक्रम चलाने होंगे। साथ ही, साइबर सुरक्षा को और मजबूत करना होगा, ताकि लोग बिना डर के यू पी आई का इस्तेमाल करें।

यू पी आई ने भारत को डिजिटल दुनिया में एक नया मुकाम दिया है। यह सिर्फ एक पेमेंट सिस्टम नहीं, बल्कि एक बदलाव है जो लोगों को जोड़ रहा है। लेकिन इस बदलाव को बनाए रखने के लिए हमें चुनौतियों का सामना करना होगा। क्या हम एक ऐसी डिजिटल अर्थव्यवस्था बना पाएंगे, जहां कोई पीछे न छूटे? यह सवाल हमें सोचने पर मजबूर करता है।

आग से झुलसी महिला और ओडिशा का डरावना ट्रेंड

कर्ज़, उत्पीड़न और सामाजिक दबाव से जूझती महिलाएं

@ रिंकू विश्वकर्मा

पुरी जिले से आई एक खबर ने पूरे ओडिशा को झकझोर कर रख दिया है। पिपिली कस्बे में रहने वाली 37 वर्षीय महिला ने कथित तौर पर कर्ज़ के बोझ से तंग आकर अपने किराए के मकान में खुद को आग के हवाले कर दिया। घटना के समय महिला का पति और बेटी घर पर मौजूद नहीं थे। जब पड़ोसियों ने धुआं उठते देखा तो तत्काल दरवाजा तोड़कर उसे बचाने की कोशिश की और अस्पताल पहुँचाया। महिला 70 से 80 फ़ीसदी तक जल चुकी हैं और फिलहाल एम्स भुवनेश्वर में जीवन और मौत के बीच संघर्ष कर रही हैं।

पुलिस ने मौके से मिट्टी का तेल, माचिस और एक सुसाइड नोट बरामद किया है। पुरी के एडिशनल एसपी सचिन पटेल ने बताया कि महिला लंबे समय से कर्ज़ के दबाव में थी।

हालांकि, सुसाइड नोट में किसी को दोषी नहीं ठहराया गया है। परिवार ने भी साफ किया कि घर के भीतर किसी तरह का पारिवारिक विवाद नहीं था।

राज्य महिला आयोग की दखलअंदाजी

घटना के बाद राज्य महिला आयोग की सदस्य उर्मिला महापात्रा ने गुरुवार को अस्पताल जाकर महिला से बयान दर्ज करने की कोशिश की। लेकिन उनकी गंभीर स्थिति के कारण यह संभव नहीं हो पाया। आयोग ने पुलिस और प्रशासन से रिपोर्ट तलब की है और महिला को हर संभव सहायता देने की बात कही है।

एक महीने में छह घटनाएं

चौंकाने वाली बात यह है कि यह मामला पिछले एक महीने में ओडिशा में महिलाओं और लड़कियों द्वारा आत्मदाह की छठी घटना है। इन घटनाओं ने समाजशास्त्रियों और मनोचिकित्सकों को गहरी चिंता में डाल दिया है।

12 जुलाई, बालासोर – कॉलेज की एक छात्रा ने कैंपस के भीतर ही खुद को आग लगा ली। उसने शिक्षक पर यौन उत्पीड़न का आरोप लगाया था। गंभीर हालत में इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई।

19 जुलाई, पुरी – 15 वर्षीय लड़की रहस्यमय परिस्थितियों में आग से झुलस गई। शुरुआत में परिवार ने हमले का आरोप लगाया, लेकिन पुलिस ने किसी बाहरी हमले से इनकार किया। पीड़िता ने 2 अगस्त को दम तोड़ दिया।

6 अगस्त, केंद्रापाड़ा – एक कॉलेज छात्रा ने अपने पूर्व प्रेमी की ब्लैकमेलिंग से परेशान होकर आत्मदाह कर लिया। मौके पर ही उसकी मौत हो गई।

12 अगस्त, बरगढ़ – 13 वर्षीय स्कूली छात्रा ने घर में खुद को आग लगा ली और उसी दिन मौत हो गई।

13 अगस्त, ढेंकानाल – पारिवारिक विवाद से परेशान एक महिला ने खुद को आग लगाई। फिलहाल वह अस्पताल में भर्ती है और उसका इलाज जारी है।

और अब 20 अगस्त, पुरी – 37 वर्षीय महिला ने कर्ज़ से तंग आकर आत्मदाह किया, जो पूरे राज्य में इस भयावह सिलसिले की नवीनतम कड़ी है।

क्यों बढ़ रही हैं आत्मदाह की घटनाएं?

विशेषज्ञों का मानना है कि इसके पीछे कई सामाजिक और आर्थिक कारण हैं। ग्रामीण और अर्ध-शहरी इलाकों में छोटे कर्ज़ की जकड़ में फंसना आम है। सूदखोरों, माइक्रोफाइनेंस कंपनियों और स्थानीय कर्ज़दाताओं के दबाव में महिलाएं मानसिक रूप से टूट जाती हैं। बालासोर और केंद्रापाड़ा की घटनाओं से साफ है कि यौन उत्पीड़न और ब्लैकमेलिंग जैसी समस्याएं भी महिलाओं को इस चरम कदम की ओर धकेल रही हैं।

ढेंकानाल और बरगढ़ जैसी घटनाएं इस ओर इशारा करती हैं कि छोटे-छोटे विवाद भी अगर समय पर सुलझाए न जाएं तो विकराल रूप ले लेते हैं।

ओडिशा जैसे राज्यों में मानसिक स्वास्थ्य को लेकर जागरूकता बेहद कम है। न तो परामर्श की व्यवस्था है और न ही लोग खुलकर अपनी समस्याएं साझा कर पाते हैं।

आँकड़े और स्थिति

नेशनल क्राइम रिकॉर्ड्स ब्यूरो (NCRB) की पिछली रिपोर्ट बताती है कि भारत में आत्महत्या करने वालों में बड़ी संख्या महिलाएं होती हैं।

ओडिशा उन राज्यों में गिना जाता है जहां हर साल घरेलू विवाद और आर्थिक परेशानियों के चलते आत्महत्या की दर ऊंची रहती है। विशेषज्ञ चेतावनी देते हैं कि अगर प्रशासन ने जल्द कदम नहीं उठाए तो यह प्रवृत्ति और बढ़ सकती है।

परिवारों की चुप्पी

पुरी की घटना में भी परिवार ने यह स्वीकार किया कि कोई घरेलू विवाद नहीं था। लेकिन महिला लंबे समय से आर्थिक बोझ से परेशान थी। सवाल यह उठता है कि आखिर क्यों परिवार और समाज इस तनाव को समय रहते पहचान नहीं पाते। विशेषज्ञ कहते हैं कि आत्महत्या के संकेत अक्सर मौजूद होते हैं, जैसे – चिड़चिड़ापन, सामाजिक मेलजोल से दूरी, नींद न आना, बार-बार निराशा व्यक्त करना। लेकिन लोग इन्हें गंभीरता से नहीं लेते।

प्रशासन और समाज की जिम्मेदारी

राज्य सरकार को चाहिए कि कर्ज़ से जूझ रही महिलाओं के लिए हेल्पलाइन और काउंसलिंग सेंटर शुरू करे। स्कूल और कॉलेजों में छात्रों के लिए मनोवैज्ञानिक परामर्श उपलब्ध हो।पुलिस को यौन उत्पीड़न और ब्लैकमेलिंग के मामलों में त्वरित कार्रवाई करनी चाहिए ताकि पीड़ित खुद को असहाय न समझें।मीडिया और समाज को मिलकर इस विषय पर खुलकर चर्चा करनी चाहिए, ताकि मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ी झिझक कम हो सके।ओडिशा में एक महीने में आत्मदाह की छह घटनाएं यह बताती हैं कि यह केवल व्यक्तिगत विफलता नहीं बल्कि सामूहिक असफलता है। कर्ज़, यौन उत्पीड़न, पारिवारिक कलह और मानसिक स्वास्थ्य की अनदेखी। ये सभी कारक महिलाओं को ऐसे रास्ते पर धकेल रहे हैं, जहाँ से वापसी संभव नहीं होती।

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम
भारत श्री

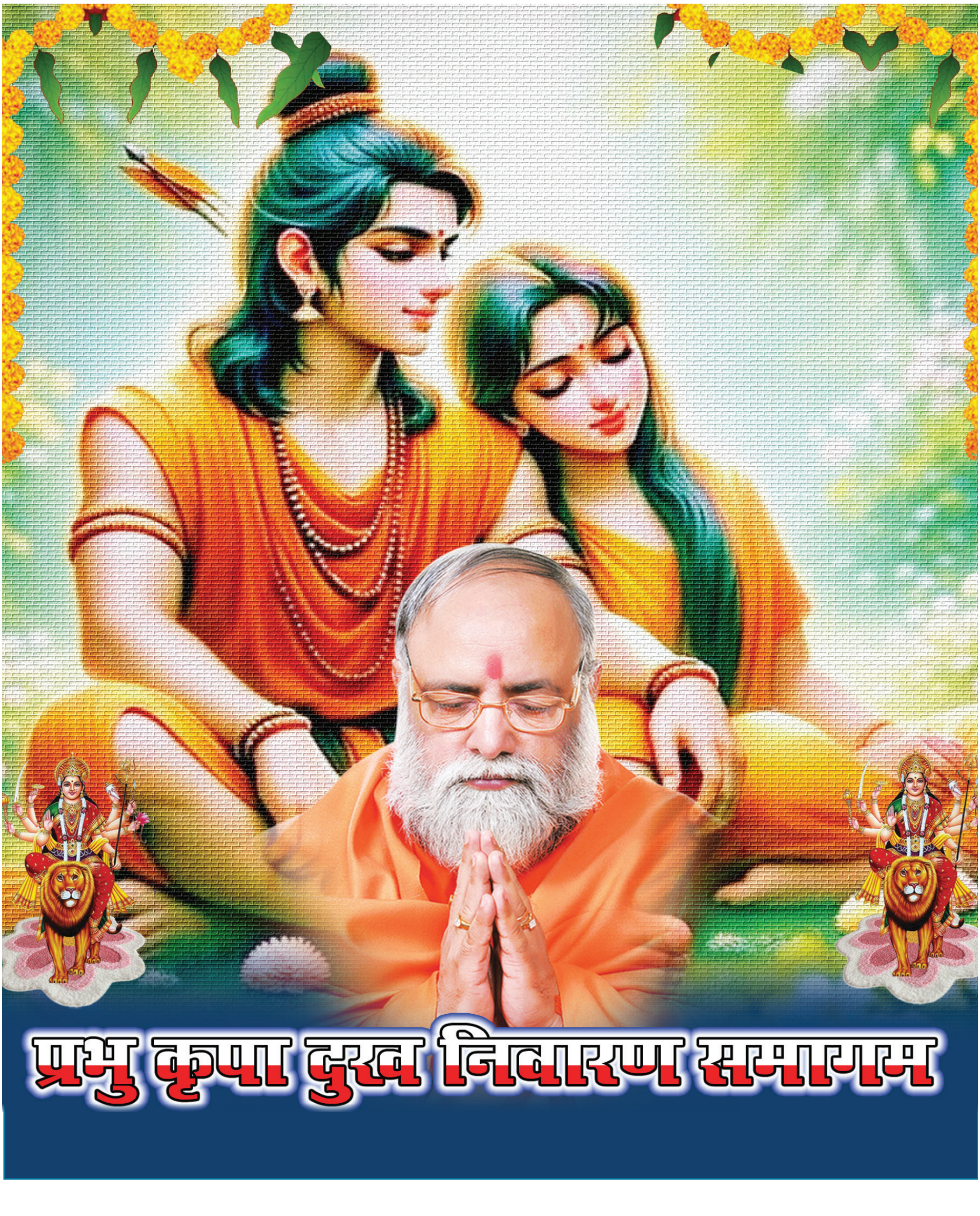

BY

Arihanta Industries

ULTIMATE HAIR SOLUTION

- BHRINGRAJ
- AMLA
- REETHA
- SHIKAKAI

100 ML

15 ML

NO ARITIFICIAL COLOR FRAGRANCE CHEMICAL

KESH VARDAK SHAMPOO

The complete solution of all hair problems:

- Prevent hair fall and make hair follicle strong.
- Promote hair growth.
- Free from all artificial & harmful chemicals like., SLS.
- 100% pure ayurvedic shampoo.
- Suitable for all hair types.

ORDER ONLINE @ :

amazon

arihanta.in

Arihanta Industries